मुद्रा भारती

• अंक-16

करेंसी नोट प्रेस, नासिक

(भारत प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड की इकाई)

करेंसी नोट प्रेस, नासिक
SAFETY PROTECTS
PEOPLE
QUALITY
PROTECTS JOBS

हिंदी पखवाड़ा-2022 के विजयी प्रतिभागी

चलार्थ पत्र मुद्रणालय
CURRENCY NOTE PRESS
भारत प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड की इकाई
भारत सरकार के पूर्ण स्वामित्वाधीन

अनुक्रमणिका

मुद्रा भारती

मार्च-2023

अंक-16

*** राजभाषा पत्रिका ***

करेंसी नोट प्रेस
नासिक रोड,
जेल रोड, नासिक-422101

*** संरक्षक ***

बोलेवर बाबु
मुख्य महाप्रबंधक

*** सह संरक्षक ***

एस. आर. वाजपे
अपर महाप्रबंधक (तक.प्रचा.)

*** मार्गदर्शन ***

नवीन कुमार
संयुक्त महाप्रबंधक (मा.सं.)

*** संपादक ***

लोकनाथ तिवारी
प्रबंधक (राजभाषा)

*** विशेष सहयोग ***

अशोक कुमार श्रीवास्तव
परामर्शदाता (राजभाषा)

रचनाएं	रचनाकार	पृ.सं.
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक का संदेश	तृप्ति पी. घोष	02
निदेशक (मा.सं.) का संदेश	एस. के. सिन्हा	03
निदेशक (वित्त) का संदेश	अजय अग्रवाल	04
मुख्य सतर्कता अधिकारी का संदेश	विनय कुमार सिंह, भा.रा.से.	05
संरक्षक की कलम से	बोलेवर बाबु	06-07
संपादकीय	लोकनाथ तिवारी	08
प्याज के पकौड़े	एस. आर. वाजपे	09-10
जीवन का सफर	कु. जुवइरिया सुपुत्री अहमद पाशा	10
सकारात्मक दृष्टिकोण	विकास कुमार सिंह	11
कृप्टो करेंसी	प्रसन्न प्रभाकर कुलकर्णी	12-15
कर्मफल	सौमित्रि दास	15
सुखी जीवन का रहस्य	राजेश कुमार शाह	16
मेहनत का फल	किरण वैद्य	17
जहाँ चाह वहाँ राह	बिपिन रमेश चौधरी	18-20
याद रखो	लक्ष्मीकांत भट्ट	20
सकारात्मक सोच	सौरभ श्रोती	21-22
एक आदर्श परिवार	जी. एम. गणेश बाबु	23-25
राजभाषा हिंदी की संवैधानिक स्थिति	अशोक कुमार श्रीवास्तव	26-28
जीवन संघर्ष	ज्योति दत्तु आडके	29-30
छोड़ दीजिए	सुमित कोरी	30
गतिविधियाँ		31-44

आवरण एवं डीटीपी
साक्षी टाईपसेटिंग, जेल रोड

प्रकाशित लेख, लेखक के निजी विचार हैं । इससे प्रबंधन एवं संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है ।

तृप्ति पी. घोष
TRIPTI P. GHOSH
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
Chairman & Managing Director
भारत प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड
Security Printing & Minting Corporation of India Limited

संदेश

सबसे पहले नव वर्ष-2023 की आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ। मैं ईश्वर से प्रार्थना करती हूँ कि यह नया वर्ष आप सभी के जीवन में सकारात्मक ऊर्जा का एक ऐसा प्रवाह लाए कि आप जीवन के सभी पक्षों में सफल हों।

हाल ही में करेंसी नोट प्रेस, नासिक द्वारा नेपाल राष्ट्र बैंक लिए वैश्विक निविदा में ना केवल भाग लिया गया बल्कि निविदा भी प्राप्त की गई और अब सीएनपी द्वारा पुनः एक बार नेपाल राष्ट्र बैंक के लिए बैंक नोटों के मुद्रण का ऐतिहासिक कार्य किया जाएगा। सीएनपी की इस उपलब्धि से नेपाल और भारत का संबंध और सुदृढ हुआ है और यह हम सबके लिए बहुत गर्व का विषय है।

आगे, करेंसी नोट प्रेस, नासिक द्वारा राजभाषा पत्रिका 'मुद्रा भारती' के 16वें अंक के प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ। मुझे यह जानकर बेहद प्रसन्नता हो रही है कि करेंसी नोट प्रेस, नासिक, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा समय-समय जारी दिशा-निर्देशों के अनुसार राजभाषा के क्षेत्र में सराहनीय कार्य कर रहा है। साथ ही राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रमों एवं लक्ष्यों के अनुसार राजभाषा के क्षेत्र में निरंतर प्रगति कर रहा है। इसके लिए इकाई के सभी अधिकारी और कर्मचारी बधाई के पात्र हैं। मुझे आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि आगे भी इकाई द्वारा राजभाषा पताका को हर्षोल्लास के साथ लहराया जाएगा और नराकास, नासिक में भी सक्रिय भूमिका का निर्वहन किया जाएगा।

एसपीएमसीआईएल का शीर्ष प्रबंधन राजभाषा कार्यान्वयन को लेकर बहुत ही गंभीर और जिम्मेदार है। हम भारतीय संविधान की आत्मा के अनुसार राजभाषा कार्यान्वयन के शत-प्रतिशत अनुपालन को लेकर पूर्णतः प्रतिबद्ध हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि अपनी प्रतिबद्धता एवं निरंतर प्रयासों के द्वारा हम राजभाषा के क्षेत्र में एक उत्कृष्ट मुकाम हासिल करेंगे और दूसरों के लिए भी प्रेरणा स्त्रोत बनेंगे। इसके अतिरिक्त करेंसी नोट प्रेस, नासिक को संरक्षा के क्षेत्र में महाराष्ट्र संरक्षा पुरस्कार प्रतिस्पर्धा-2021 में महाराष्ट्र चैपटर के अंतर्गत वर्ष-2021 के लिए राष्ट्रीय संरक्षा कौंसिल द्वारा 'सर्टिफिकेट ऑफ एक्सिलेंस' से सम्मानित किया जाना हम सबके लिए बहुत गौरव की बात है।

अंत में मैं प्रसिद्ध शायर बशीर बद्र की चंद पंक्तियों के साथ अपनी वाणी को विराम देती हूँ कि

"मुसाफिर हैं हम भी, मुसाफिर हो तुम भी,
किसी मोड़ पर, फिर मुलाकात होगी।"

शुभकामानाओं सहित.....

तृप्ति घोष

(तृप्ति पी. घोष)
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

सुनील कुमार सिन्हा
SUNIL KUMAR SINHA
निदेशक (मानव संसाधन)
Director (Human Resource)
भारत प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड
Security Printing & Minting Corporation of India Limited

संदेश

आप सभी को नव वर्ष-2023 की हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं।

करेंसी नोट प्रेस, नासिक द्वारा 'मुद्रा भारती' का निरंतर प्रकाशन एवं इसमें समाविष्ट पठनीय सामग्री इसके आकर्षण का मुख्य केंद्र है। गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के दिशा-निर्देशों के अनुसार करेंसी नोट प्रेस द्वारा वर्ष में 'मुद्रा भारती' के दो अंकों का प्रकाशन किया जाना सराहनीय हैं। मुझे पूरा विश्वास है कि करेंसी नोट प्रेस, नासिक भविष्य में भी राजभाषा के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति करेगा और नराकास कार्यालयों के लिए एक उदाहरण स्थापित करेगा।

हम भारतीयों के लिए यह गौरव की बात है कि भारत जी-20 प्रेसीडेंसी में शुमार हुआ है। जैसाकि हम सबको पता है कि जी-20 में वर्ष-2023 का केंद्रीय एजेंडा स्वास्थ सेवाएँ हैं। पूरा विश्व कोविड-20 महामारी की त्रासदी झेलने के पश्चात स्वास्थ्य सेवाओं की प्राथमिकता पर एकजुट है। भारत ही नहीं बल्कि पूरा विश्व महामारी से निपटने में सक्षमता, स्वास्थ्य प्रणाली को मजबूत बनाने और एंटी माइक्रोबायल प्रतिरोधक क्षमता के विकास पर एकजुट होकर कार्य करना चाहती है। एसपीएमसीआईएल द्वारा भी वर्ष-2023 में सीएसआर निधि को स्वास्थ्य सेवाओं की बेहतरी के लिए सचेत रूप से व्यय किए जाने की योजना है। करेंसी नोट प्रेस द्वारा इस मामले पर लगातार कार्य किया जा रहा है ताकि पात्र नागरिकों को इसका संपूर्ण लाभ मिल सके।

मुझे यह जानकर बहुत प्रसन्नता हुई है कि करेंसी नोट प्रेस, नासिक को संरक्षा के क्षेत्र में महाराष्ट्र संरक्षा पुरस्कार प्रतिस्पर्धा -2021 में महाराष्ट्र चैपटर के अंतर्गत वर्ष-2021 के लिए राष्ट्रीय संरक्षा कौंसिल द्वारा 'सर्टिफिकेट ऑफ एक्सिलेंस' से सम्मानित किया गया है। करेंसी नोट प्रेस को यह पुरस्कार संरक्षा के क्षेत्र में लगातार तीन वर्षों अर्थात वर्ष 2018, 2019 एवं 2020 में प्राप्त पुरस्कार के कारण प्रदान किया गया। करेंसी नोट प्रेस को संरक्षा के क्षेत्र में प्राप्त 'सर्टिफिकेट ऑफ एक्सिलेंस' पुरस्कार यह सिद्ध करता है कि इकाई में मानव संसाधन का बहुत ही बेहतर उपयोग किया जा रहा है तथा कार्य कुशलता में लगातार वृद्धि हो रही है। मैं आशा करता हूँ कि करेंसी नोट प्रेस का यह प्रदर्शन भविष्य में इसी प्रकार बना रहेगा।

अंत में मैं पुनः आप सभी के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य तथा आध्यात्मिक उन्नति एवं आर्थिक संपन्नता की कामना करता हूँ। 'मुद्रा भारती' के इस अंक की सफलता के लिए शुभकामनाओं सहित,

(सुनील कुमार सिन्हा)
निदेशक (मा.सं.)

अजय अग्रवाल
AJAY AGARWAL
निदेशक (वित्त)
Director (Finance)
भारत प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड
Security Printing & Minting Corporation of India Limited

संदेश

साथियों, आप सभी को नववर्ष-2023 की हार्दिक शुभकामनाएं।

मुझे यह जानकर बेहद प्रसन्नता हुई कि करेंसी नोट प्रेस, नासिक को नेपाल राष्ट्र बैंक की वैश्विक निविदा प्राप्त हुई है और अब सीएनपी द्वारा नेपाल राष्ट्र बैंक के लिए बैंक नोटों का मुद्रण किया जाएगा। यह उल्लेखनीय है कि सीएनपी द्वारा नेपाल राष्ट्र बैंक के लिए बैंक नोटों का मुद्रण पहले भी किया जा चुका है। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि सीएनपी को अन्य यूरोपीय देशों की भी वैश्विक निविदाएँ प्राप्त हों और सीएनपी लगातार उत्कृष्ट प्रदर्शन कर हम सभी को गौरवान्वित करती रहे।

एसपीएमसीआईएल प्रबंधन अपनी सभी इकाईयों के आधुनिकीकरण के लिए प्रतिबद्ध है और करेंसी नोट प्रेस, नासिक में यह कार्य बहुत तेजी से हो रहा है तथा इसे विश्व स्तरीय रूप प्रदान किया जा रहा है।

राजभाषा के क्षेत्र में भी इकाई का प्रदर्शन बहुत ही सराहनीय और प्रेरक रहा है। करेंसी नोट प्रेस, नासिक द्वारा नराकास, नासिक में सक्रिय भूमिका का निर्वाह किया जा रहा है जिसके परिणामस्वरूप करेंसी नोट प्रेस को पिछले लगातार 7 वर्षों से नराकास स्तर के पुरस्कार प्राप्त हो रहे हैं।

'मुद्रा भारती' के पिछले अंक भी स्तरीय एवं पठनीय रहे हैं जिसका पूरा श्रेय इकाई के लेखक कार्मिकों को जाता है जिन्होंने अपनी रचनात्मकता को न केवल जिंदा रखा है बल्कि उसे लगातार माँजते रहे हैं। मैं 'मुद्रा भारती' के संपादन मंडल को भी साधुवाद देता हूँ जिनके अथक प्रयास द्वारा 'मुद्रा भारती' का 16वाँ अंक प्रकाशित हो रहा है।

मैं पत्रिका के इस अंक के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ।

अजय अग्रवाल

(अजय अग्रवाल)
निदेशक (वित्त)

विनय कुमार सिंह, भा.रा.से.
VINAY K. SINGH, I.R.S.
मुख्य सतर्कता अधिकारी
Chief Vigilance Officer
भारत प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड
Security Printing & Minting Corporation of India Limited

संदेश

आप सभी पाठकों को नव वर्ष-2023 की हार्दिक शुभेच्छा।

यह बहुत हर्ष का विषय है कि करेंसी नोट प्रेस, नासिक द्वारा 'मुद्रा भारती' के 16वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। किसी भी संस्थान द्वारा राजभाषा के क्षेत्र में अपनी सक्रिय उपस्थिति बनाए रखने में राजभाषा पत्रिका का बहुत यशस्वी योगदान माना जाता है। करेंसी नोट प्रेस, नासिक द्वारा 'मुद्रा भारती' के नए अंक का प्रकाशन इसकी राजभाषा के क्षेत्र में ना केवल सक्रियता को सिद्ध करता है बल्कि राजभाषा विभाग द्वारा जारी दिशा-निर्देशों के अनुपालन के लिए अपनी प्रतिबद्धता को भी दर्शाता है।

एसपीएमसीआईएल की सभी नौ इकाईयों में केंद्रीय सतर्कता आयोग द्वारा समय-समय पर जारी दिशा-निर्देशों का पूर्ण अनुपालन सुनिश्चित किया जाता है। करेंसी नोट प्रेस राष्ट्र की एक अमोल आर्थिक धरोहर है जिसमें कार्यरत सभी कर्मचारी पूरी निष्ठा, ईमानदारी एवं पारदर्शी तरीके से बैंक नोटों का उत्पादन करते हैं।

साथ ही मुझे यह जानकर बेहद प्रसन्नता है कि इकाई में स्टेट ऑफ आर्ट मशीनों की स्थापना के पश्चात दैनिक उत्पादन में अभूतपूर्व वृद्धि दर्ज की गई है। मैं आशा करता हूँ कि करेंसी नोट प्रेस, नासिक संपूर्ण सकारात्मक ऊर्जा के साथ उत्पादन के अतिरिक्त अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्रों में भी निरंतर प्रगति करे और राष्ट्र का नाम वैश्विक स्तर पर उजागर करे।

शुभकामनाओं सहित,

(विनय कुमार सिंह भा.रा.से.)
मुख्य सतर्कता अधिकारी

संरक्षक की कलम से

नमस्कार साथियों ।

'मुद्रा भारती' के 16वें अंक के साथ मुझे फिर से एक बार आप सभी के साथ संवाद करने का सुअवसर प्राप्त हुआ है। करेंसी नोट प्रेस ने अति संवेदनशील संस्थान के अनुरुप अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा मानकों के अनुसार सुरक्षा व्यवस्था को अत्यंत सुदृढ कर लिया है। टर्न स्टाइल गेटों की स्थापना के साथ ही परिसर के भीतर प्रवेश एवं निकास को सुरक्षित किया जा चुका है। साथ ही इकाई में राष्ट्रीय संरक्षा परिषद की सिफारिशों के अनुसार संरक्षा मानकों में निरंतर सुधार किया गया है। अपने सभी कर्मचारियों की सुरक्षा एवं संरक्षा के लिए करेंसी नोट प्रेस पूर्ण रुप से प्रतिबद्ध है ।

आगे, हमने बैंक नोटों की गुणवत्ता के क्षेत्र में भी बहुत प्रगति की है। हम सभी ने यह ठान लिया है कि गुणवत्ता पूर्ण बैंक नोटों के मुद्रण के लिए हमें जो भी प्रयास करना होगा, हम करेंगे। इस प्रयास का ही परिणाम है कि आज करेंसी नोट प्रेस, नासिक अन्तर्राष्ट्रीय मानकों के अनुरुप उत्पादन कर रहा है और इसका पूरा श्रेय यहाँ कार्यरत अधिकारियों, कर्मचारियों, मान्यता प्राप्त यूनियनों और एसोसिएशनों एवं कामगार बंधुओं को जाता है ।

करेंसी नोट प्रेस ने जहाँ एक ओर बैंक नोटों की गुणवत्ता के क्षेत्र में प्रगति की है वहीं बैंक नोटों के उत्पादन में भी रिकॉर्ड तोड़ उत्पादन और परेषण किया है। नई मशीनों के आगमन से हमारे प्रयासों को नई ऊँचाई मिली और हम बैंक नोटों के प्रतिदिन उत्पादन के शीर्ष पर पहुँच गए हैं। यह अपने आपमें एक मिसाल और रिकॉर्ड है। परंतु हम यहीं तक नहीं रुकने वाले बल्कि हमें प्रतिदिन अपने प्रयासों में और अधिक सुधार करना है और भविष्य में नई ऊँचाईयों को छूना है। मुझे पूरा विश्वास है कि एक बेहतरीन टीम वर्क के साथ हम अपने इरादों में अवश्य सफल होंगे।

मुझे यह सूचित करते हुए भी अत्यंत हर्ष हो रहा है कि हाल ही में सीएनपी ने अन्तर्राष्ट्रीय निविदा में भाग लेते हुए चीन को पीछे छोड़ते हुए नेपाल राष्ट्र बैंक की निविदा में सफलता प्राप्त की है। अब सीएनपी भारत के अतिरिक्त नेपाल राष्ट्र बैंक, नेपाल के लिए भी बैंक नोटों का मुद्रण करेगी। सफलता की इस कहानी में एसपीएमसीआईएल के शीर्ष नेतृत्व का बहुत बड़ा योगदान रहा है। इसके लिए टीम सीएनपी, एसपीएमसीआईएल के शीर्ष नेतृत्व का आभार व्यक्त करती है। हमें आशा है कि भविष्य में भी हमें भारत के अतिरिक्त अन्य विदेशी राष्ट्रों के लिए बैंक नोटों के मुद्रण का सौभाग्य प्राप्त होगा।

करेंसी नोट प्रेस, नासिक अपने सभी कर्मचारियों के कल्याण के लिए भी पूरे हृदय से समर्पित एवं प्रतिबद्ध है। कर्मचारी कल्याण योजना के अंतर्गत सीएनपी की औद्योगिक कैंटीन का कायाकल्प किया जा चुका है। खाद्य एवं पेय पदार्थों की गुणवत्ता में भी अभूतपूर्व सुधार किया गया है। वर्तमान में औद्योगिक कैंटीन में सभी खाद्य एवं पेय

कोई भी जन्म से बुद्धिमान नहीं होता, क्योंकि ज्ञान अपने प्रयासों से ही प्राप्त होता है। - टी. कृष्णमाचार्य

पदार्थों की बिक्री कंपनी द्वारा प्रदान की गई कैंटीन कार्ड से की जा रही है जिससे कैंटीन की लेखा व्यवस्था में ना केवल सुधार हुआ है बल्कि बिक्री किए गए खाद्य एवं पेय पदार्थों का सुनिश्चित हिसाब भी आसानी से रखा जा रहा है। इस व्यवस्था ने सीएनपी की औद्योगिक कैंटीन में पारदर्शिता लाने में बहुत बड़ा योगदान दिया है।

वर्तमान में सीएनपी की औद्योगिक कैंटीन में अन्य खाद्य पदार्थों के साथ ज्वार एवं बाजरे की रोटियाँ भी परोसी जा रही है जिसका रसास्वादन कामगार, कर्मचारी एवं अधिकारी कर रहे हैं। यह भारत सरकार द्वारा देशज खाद्यों के महत्व को प्रतिपादित करने वाला वास्तव में एक बहुत जरुरी पहल है जिस पर सीएनपी की औद्योगिक कैंटीन अमल कर रही है।

आगे, सीएनपी में उत्पादन क्षेत्रों एवं कॉरिडोरों का सौंदर्यीकरण किया गया है। हिपोक्सी फ्लोरिंग एवं शॉप फ्लोर कॉरिडोर में चारों तरफ सीएनपी द्वारा अलग-अलग काल खंडों में देशी एवं विदेशी राष्ट्रों के लिए मुद्रित बैंक नोटों की रिपब्लिका लगाई गई है जिससे शॉप फ्लोर क्षेत्र की सुंदरता में चार -चाँद लग गए हैं। इसके अतिरिक्त औद्योगिक कैंटीन के सामने दो नए लॉन बनाए गए हैं जिसका आनंद वहाँ से गुजरते हुए सभी कर्मचारी लेते हैं। सीएनपी के मुख्य प्रशासनिक भवन के समक्ष एक नए मनोहारी पानी के फौव्वारे का निर्माण किया गया है जिससे प्रशासनिक इमारत का पूरा दृश्य ही सुहावना हो गया है। इन कार्यों से इकाई में स्वच्छता की एक नई लहर दौड़ गई है। आज सीएनपी का प्रत्येक कर्मचारी कार्य स्थल पर साफ-सफाई को लेकर बहुत सजग हो गया है और उनका पूरा प्रयास रहता है कि परिसर की सुंदरता को और कैसे बढ़ाया जा सकता है। इस प्रकार मुझे कर्मचारियों की मनोवृत्ति में परिवर्तन को देखना बहुत सुंदर लगता है।

बिना राजभाषा के सीएनपी की सफलता की गाथा अधूरी है। राजभाषा के क्षेत्र में सीएनपी ने बहुत ही शानदार प्रदर्शन किया है। नराकास, नासिक की प्रत्येक गतिविधियों में सीएनपी का प्रत्यक्ष एवं सक्रिय योगदान रहा है। नराकास, नासिक से सीएनपी को पिछले सात वर्षों से लगातार राजभाषा कार्यान्वयन एवं राजभाषा पत्रिका का पुरस्कार प्राप्त होते आ रहा है। अभी हाल ही में एसपीएमसीआईएल के शीर्ष प्रबंधन ने इकाई के राजभाषा अधिकारी को फिजी, नांदी में आयोजित विश्व हिंदी सम्मेलन में उपस्थित रहने का मौका प्रदान किया ताकि वैश्विक स्तर पर राजभाषा से संबंधित अद्यतन जानकारी से वे समृद्ध हो सके और उसका लाभ एसपीएमसीआईएल को प्राप्त हो सके। निसंदेह ऐसे आयोजनों में भाग लेने से राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में कार्यरत अधिकारियों का मनोबल ऊँचा होता है और उनकी कार्यनिष्ठा में भी वृद्धि होती है। मैं आशा करता हूँ कि सीएनपी का नाम राजभाषा के क्षेत्र में और भी रौशन हो और सीएनपी को भारत सरकार से राष्ट्रीय स्तर का पुरस्कार प्राप्त हो।

कुल मिलाकर करेंसी नोट प्रेस, नासिक कार्य स्थल के प्रत्येक क्षेत्र में उन्नति करने के लिए अपनी प्रतिबद्धता दिखा रही है और मुझे पूरा विश्वास है कि टीम सीएनपी में वह काबिलियत है कि वह प्रत्येक दिन सफलता की नई बुलंदियों को छुएगी। इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपनी बात को यही विराम देता हूँ।

जय हिंद, जय भारत।

◆◆◆

बो. बाबु

(बोलेवर बाबु)

मुख्य महाप्रबंधक

फूल की पंखुड़ियाँ तोड़कर, तुम फूल की सुंदरता नहीं बटोर सकते। - रवीन्द्रनाथ टैगोर

संपादकीय

नमस्कार साथियों,

नए वर्ष, 2023 की आप सभी को मंगल कामनाएँ।

करेंसी नोट प्रेस के लिए बीता वर्ष,2022 बहुत ही सफल रहा। इकाई में नई मशीनों का आगमन हुआ वहीं नई नियुक्तियों के माध्यम से युवा वर्ग का पदार्पण भी हुआ। इस प्रकार इकाई में नया जोश और अनुभव का बहुत ही समरस समागम हुआ है। इकाई की स्वच्छता गतिविधियाँ इतनी शानदार है कि ऐसा लगता है सीएनपी एकदम नए कलेवर में अपनी खूशबू बिखेरने को तैयार है। वातावरण में सकारात्मक ऊर्जा की भींनी-भींनी सुगंध प्रत्येक कर्मचारी के बॉडी लैंग्वेज में देखने को मिल रही है। और यह सारा कमाल सीएनपी के मुख्य महाप्रबंधक श्री बोलेवर बाबु जी के कारण है।

आज सीएनपी में प्रत्येक अधिकारी, कर्मचारी और कामगार बंधु कंधे से कंधा मिलाकर एक सहज गति से ना केवल दैनिक उत्पादन के अपने रिकॉर्ड को बना और तोड़ रहे हैं बल्कि कला, संगीत, लेखन, पेंटिंग, गायन, क्रिकेट, फुटबाल, बैडमिंटन आदि जैसे खेलों में भी रुचिकर ढंग से अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर रहे हैं। यह सब देखना एक अदभुत अनुभव प्रदान करता है और सीएनपी को भविष्य के प्रति आश्वस्त करता है।

कहा जाता है कि प्रतिस्पर्धा में भाग लेना विजयी होने से अधिक महत्वपूर्ण है।हाल ही में सीएनपी में हिंदी पखवाड़ा-2022 के आयोजन के दौरान कर्मचारियों द्वारा बहुत बड़ी संख्या में हिस्सा लेना और उसमें से कुल 48 प्रतिभागियों का विजयी होना इस बात को सिद्ध करता है।

'मुद्रा भारती' के इस अंक में आप स्वयं सीएनपी की सकारात्मक ऊर्जा को इसमें प्रकाशित लेखों के माध्यम से महसूस करेंगे। मुझे आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि मुद्रा भारती का 16वाँ अंक आपको बेहद पसंद आएगा और आपकी पाठकीय प्रतिक्रियाएं हमें 'मुद्रा भारती' के अगले अंक के प्रकाशन में बल प्रदान करेगी।

इन्ही शब्दों के साथ फिलहाल लेखनी को विराम देता हूँ।

◆◆◆

(लोकनाथ तिवारी)
प्रबंधक (रा.भा.) एवं संपादक

कबीर के दोहे

जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान।
मोल करो तलवार का, पड़न रहन दो म्यान।।

माला तो कर में फिरे, जीभ फिरे मुख माही।
मनवा तो चहू दिसा फिरे, यह तो सुमिरन नाही।।

कबीर घास न नींदिए, जो पाऊँ तलि होई।
उड़ी पड़े जब आंखिन में, खरी दुहेली होई।।

जग में बैरी कोई नहीं, जो मन सीतल होय।
या आपा को डारि दे, दया करे सब कोय।।

◆◆◆

यदि आप धनवान हैं, तो विनम्र बनें। फल लगने पर पौधे झुक जाते हैं। - अज्ञात

प्याज के पकौड़े

एस.आर. वाजपे
अपर महाप्रबंधक (तकनीकी प्रचालन)

शादी के पैंतीस साल बाद अचानक एक दिन उसने मुझसे पूछा - 'मेरे बारे में आप क्या सोचते हैं?'

वह घबड़ाया, अस्पष्ट...

अब ऐसे सवालों की आदत नहीं थी न....प्यार नया हो तो ठीक है।

वह दिन में कम से कम एक बार इस सवाल के साथ आती थी और उसके पास भी बहुत भारी जवाब तैयार रहते थे।

लेकिन फिर शादी हो गयी।

संसार नामक प्रश्नपत्र हल करते-करते इस तरह की मौखिक परीक्षा देना भूल गए और परसों अचानक ये गुगली वाला सवाल आया जब उसने सवाल पूछा, तो वह रोटी बना रही थी। हाथ में बेलन, सामने गरम तवा।

उसने संभावित खतरे को पहचाना और बोला -

'कहने के लिए बहुत कुछ है, शाम को आराम से बोलूँगा'।

ऐसा कहकर वह काम पर चला गया!

वह घर से तो निकल गया पर घर जेहन से उतरा नहीं था।

पूरा दिन शब्दों के मिलान में बीत गया। कठिन होता है ये सब।

रिश्ते का गणित एक बार जज्बात में फंस जाए तो शब्दों से सुलझाना मुश्किल होता है। वह सोच रहा था क्या बताए? मैं राजा तू मेरी रानी आदि बोले क्या? नहीं यह बहुत फिल्मी लगता है। तुम बहुत अच्छी हो ऐसा कहे क्या? नहीं, नहीं, उसे यह बहुत अटपटा लग सकता है।

सहिष्णु और समझदार कहे तो वह जरुर कहेगी - 'राजनेता की तरह जवाब मत दो'।

उसे कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि कैसा व्यवहार करें जो पत्नी को पसंद आए। वह सोचने लगा कि इन दोनों बातों को पढ़ाने वाली क्लासेस होनी चाहिए थी। ऐसी क्लासों में लाईन लगेगी पतियों की। उसके मन में ये अजीब-अजीब विचार आ रहे थें।

सूर्य देव सो गए। अब समय आया घर जाने का। जैसे ही वह मुझे देखेगी, उसकी दाहिनी आँख की भौहें उठेगी और जवाब मांगेगी। उसे इस बात का पूरा यकीन था। उसका चेहरा एक ऐसे छात्र की तरह था जो घर पर बिना पढ़ाई किए स्कूल चला जाता है। फिर भी उसने घंटी बजाई। उम्मीद के मुताबिक उसने दरवाजा नहीं खोला। उसके बेटे ने

याद रखना, अंधेरी रात में आपको दिया जलाने से कोई नहीं रोक सकता। - हरिवंश राय बच्चन

दरवाजा खोला और अगले ही पल उसकी नाक में प्याज के पकौड़े की महक आ गई। लड़का उछल कर बोला -

'माँ ने प्याज के पकौड़े बनाए हैं, जल्दी से हाथ-पैर धो लो।'

वह सिर हिलाकर अंदर गया और अगले ही पल टेबल पर दिखाई दिया।

पत्नी ने प्याज के पकौड़े की थाली सामने रख दी और उसे एक अजीब दोषी निगाहों से देखा।

उसने बड़ी मुस्कराहट के साथ पूछा - कुछ सुझा?

मैंने ना में सिर हिलाया।

उसने जल्दी से खुशी से हाथ जोड़कर कहा...

'मुझे भी नहीं सुझा...!'

वह फिर उलझ गया, ऐसी अनापेक्षित प्रतिक्रिया?

और फिर वह बोलती रही -

'कुछ दिन पहले मेरे एक दोस्त ने मुझसे पूछा, आप अपने पति के बारे में क्या सोचती हैं?' मैंने सात दिन तक सोचा लेकिन कुछ नहीं सुझा। फिर मैं डर गयी क्या मैंने तुम्हारे लिए अपना प्यार खो दिया है? मैं अपने आपको दोषी महसूस करने लगी। मुझे नहीं समझ आ रहा थी कि क्या करें। मुझे खुद पर शक था लेकिन 35 साल बाद मुझे यकीन था कि तुम्हारा प्यार फीका नहीं पड़ा है तो मैंने आपसे ये सवाल किया।

सोचा जवाब दे सके तो 'गलती' हम में है, लेकिन नहीं, आप भी जवाब नहीं दें पाए। तो अब हम उस बिंदु पर हैं जहाँ सिर्फ 'फीलिंग' खत्म होती है और 'शेयरिंग' शुरु हो जाती है।

शब्द गुम हो गए हैं अब और जरुरत महसूस नहीं होती इसलिए अब खुद को एक दूसरे के सामने साबित करने की जद्दोजहद खत्म। ऐसा कहकर उसने उसे भी एक प्याज का पकौड़ा खिला दिया। मैं कसम से कहता हूँ पैंतीस साल की जिंदगी का सारा प्रेम उस प्याज के पकौड़े में उतर गया था।

◆◆◆

कुमारी जुवइरिया,
सुपुत्री श्री अहमद पाशा,
संयुक्त महाप्रबंधक (त.प्र.)

जीवन का सफर

पूछा जो मैंने एक दिन खुदा से,
अंदर मेरे ये कैसा शोर हैं,
हँसा मुझ पर फिर बोला,
चाहतें तेरी कुछ और थी,
पर तेरा रास्ता कुछ और है,
रूह को संभालना था तुझे,
पर सूरत सँवारने पर तेरा जोर है,
खुला आसमान, चाँद, तारे चाहत हैं तेरी,
पर बंद दीवारों को सजाने पर तेरा जोर है,
सपने देखता है खुली फिजाओं के,
पर बड़े शहरों में बसने की कोशिश पुरजोर है।

सकारात्मक दृष्टिकोण

विकास कुमार सिंह
प्रबंधक (वित्त एवं लेखा)

कहा गया है कि सकारात्मक दृष्टिकोण जीवन में सफलता की चाभी है।

सकारात्मक दृष्टिकोण से तात्पर्य यह है कि उच्च आदर्श, नैतिक मूल्य एवं अच्छे विचारों को स्थापित करना है जिनका झुकाव अच्छाईयों को तलाश करना होता है। आगे बढ़ने और समस्याओं से बचने के लिए प्रत्येक स्थिति में सकारात्मक परिणाम खोजने के लिए हमेशा जीवन में ऐसी चीजों को देखें जिसमें आने वाला भविष्य उज्ज्वल हो।

एक अच्छा दृष्टिकोण अथवा सकारात्मक दृष्टिकोण मुख्य रूप से सकारात्मक बातों पर ध्यान देता है तथा मुख्य रूप से ऐसे मामलों पर निर्भर करता है जो बोरियत के बजाय रचनात्मक गतिविधि के पक्ष में है। उदासी पर खुशी, निराशा पर आशा। एक सकारात्मक दृष्टिकोण मन की वह स्थिति है जिसे केवल सचेत प्रयास के माध्यम से बचाया जा सकता है। जब कोई चीज किसी के मानसिक ध्यान को नकारात्मक दिशा में घुमाती है तब जो सकारात्मक व्यक्तित्व के मालिक हैं, वह जानते हैं कि अपनी मन:स्थिति को पुन: कैसे सकारात्मक दिशा की ओर ले जाना है।

दृष्टिकोण वह तरीका है जिससे आप अपनी भावनाओं को दूसरे तक पहुँचाते हैं। जब आप आशावादी होते है तब आप भविष्य में आने वाली समस्याओं के सफल होने के बारे में अनुमान लगा सकते हैं और सकारात्मक दृष्टिकोण को एक दूसरे को बता सकते हैं तथा लोग आमतौर पर अनुकूल प्रतिक्रिया देते हैं। जब आप उदास होते हैं तब लोग आपसे अच्छी उम्मीद नहीं करते हैं। आपका दृष्टिकोण प्राय: नकारात्मक होता है और लोग आपसे बचना चाहते हैं। इस सबकी शुरूवात आपके मस्तिष्क के अंदर होता है। दृष्टिकोण मस्तिष्क की वह स्थिति है जिसमें आप मानसिक रूप से चीजों को देखते है। दृष्टिकोण कभी स्थिर नहीं होता है। यह एक सतत गतिशील, संवेदनशील और आधारात्मक प्रक्रिया है। जब तक आप निरंतर सतर्क नहीं है तब तक नकारात्मक सोच से विचलित होने की संभावना रहती है। यह आपके अच्छे अवसरों के बजाय कठिनाईयों पर समय बिताने का कारण बनेगा। यदि नकारात्मक सोच आपके मस्तिष्क में काफी लंबे समय तक बना रहता है तो यह आपके स्वभाव में भी दिखाई देगा। आपके अंदर सकारात्मक सोच मौजूद रहता है लेकिन यह नकारात्मक दृष्टिकोण पर हावी हो जाता है। नकारात्मक सोच को अपनी सोच से बाहर निकलना एक चुनौती है। सकारात्मक सोच जीवन के दैनिक मामलों के साथ अधिक आसानी से आपके जीवन में आशावाद लाता है और चिंता तथा नकारात्मक सोच से आसानी से बचाता है। यदि आप इसे जीवन के उद्देश्य के रूप में ग्रहण करेंगे तब यह आपके जीवन में रचनात्मक बदलाव लाएगा और आपको अधिक प्रसन्नचित, तेजस्वी एवं सफल बनाएगा। इसलिए हमेशा सकारात्मक सोच के साथ जीवन का उज्ज्वल पक्ष देखें, आशावादी बनें और सर्वोतम होने की चाह रखें।

◆◆◆

जो लोग बुरी तरह असफल होने का साहस करते हैं, उन्हें बड़ी सफलता मिल सकती है। - अज्ञात

कृप्टो करेंसी

प्रसन्न प्रभाकर कुलकर्णी
प्रबंधक (तकनीकी प्रचालन)

एक वक्त था, जब दुनिया में कोई करेंसी नहीं थी। सिर्फ वस्तुओं के बदले वस्तुओं का लेनदेन होता था लेकिन उसके बाद नोट और सिक्के अस्तित्व में आए और लेनदेन का तरीका पूरी तरह से बदल गया। आज यही नोट और सिक्के हमारी मुख्य करेंसी है लेकिन इसके अलावा भी एक करेंसी है जो पूरी तरह डिजिटल है। इसे कृप्टों करेंसी कहा जाता है। लेकिन सवाल यह है कि यह कृप्टों करेंसी है क्या और यह कैसे काम करती है? साथ ही इसके क्या-क्या फायदे और नुकसान है? आइए, विस्तार से जानते हैं।

कृप्टो करेंसी :- आज हर देश के पास अपनी मुद्रा है जैसे कि भारत के पास रुपया है, अमेरिका के पास डॉलर है, सऊदी अरब के पास रियाल है। इसी तरह बाकी देशों के पास भी अपनी-अपनी करेंसी है लेकिन सवाल यह है कि करेंसी होती क्या है? तो इसका जवाब है, एक ऐसी धन प्रणाली, जो किसी देश द्वारा मान्यता प्राप्त हो और वहाँ के लोगों द्वारा धन के माध्यम के रुप में इस्तेमाल की जाती हो। साथ ही इसका कोई अंकित बाजार मूल्य हो, करेंसी कहलाती है अर्थात जिसके बदले कोई वस्तु या सेवा खरीदी जा सके, वह करेंसी है।

जैसे कि 50 रुपये के नोट से आप फल खरीद सकते है। इसीलिए वह करेंसी है लेकिन 500 मूल्यवर्ग के पुराने नोट से कुछ नहीं खरीद सकते क्योंकि इसकी मान्यता सरकार द्वारा रद्द कर दी गई है इसलिए उसका कोई बाजार मूल्य नहीं है। इसलिए वह करेंसी नहीं है। आमतौर पर करेंसी को कागज या धातु के टुकड़ों (सिक्को) पर मुद्रित किया जाता है। इसलिए यह नकद करेंसी कहलाती है अर्थात इसे हुवा और पर्स में लेकर घूमना संभव है लेकिन कृप्टो करेंसी के साथ ऐसा नहीं है।

कृप्टो करेंसी क्या है? :- कृप्टो करेंसी एक डिजिटल करेंसी है, जिसे एक डिसेंट्रलाइज सिस्टम द्वारा प्रबंधित किया जाता है। इसमें प्रत्येक लेन-देन का डिजिटल हस्ताक्षर द्वारा वेरिफिकेशन किया जाता है और कृप्टोग्राफी की मदद से उसका रिकॉर्ड रखा जाता है। दूसरे शब्दों में कृप्टो करेंसी ब्लॉक-चेन तकनीक पर आधारित वर्चुअल करेंसी है, जो कृप्टोग्राफी द्वारा सुरक्षित है। इसे कॉपी करना लगभग नामुमकिन है।

भक्ति वह है जो ज्ञान उत्पन्न करती है; ज्ञान वह है जो स्वतंत्रता को गढ़ता है। - तुलसीदास

वास्तव में, कृप्टो करेंसी एक समकक्ष कैश प्रणाली है, जो कंप्यूटर एल्गोरिथम पर बनी है। अर्थात प्रत्यक्ष रुप में इसका कोई अस्तित्व नहीं है। यह सिर्फ डिजिटल के रुप में ऑनलाइन रहती है और इसकी सबसे बड़ी खास बात यह है कि यह पूरी तरह डिसेंट्रलाइज्ड है। अर्थात इस पर किसी भी देश या सरकार का कोई नियंत्रण नहीं है, इसलिए शुरुआत में इसे अवैध करार दिया गया था लेकिन बाद में बिट कॉइन की लोकप्रियता को देखते हुए कई देशों ने इसे वैध कर दिया लेकिन कई देश अभी भी इसके खिलाफ है।

कृप्टो करेंसी का मूल्य :- हालांकि कृप्टों करेंसी को नोट और सिक्को के रुप में मुद्रित नहीं किया जाता फिर भी इसका अपना एक मूल्य होता है, अर्थात कृप्टो करेंसी से आप समान खरीद सकते हैं, व्यापार कर सकते हैं और निवेश भी कर सकते हैं लेकिन अपनी तिजोरी में नहीं रख सकते और ना हीं इसे बैंक के लॉकर में रख सकते हैं क्योंकि यह डिजिट के रुप में ऑनलाइन रहती है। इसलिए इसे डिजिटल मनी या वर्चुअल मनी या इलेक्ट्रॉनिक मनी भी कहा जाता है।

अगर कृप्टो करेंसी के मूल्य की बात करें तो इसका मूल्य नकद करेंसी से कहीं ज्यादा है और कुछ टॉप कृप्टो करेंसी का मूल्य तो डॉलर से भी हजारों गुना ज्यादा है लेकिन एक सच यह भी है कि यह मूल्य स्थिर नहीं रहती अर्थात कृप्टो करेंसी का बाजार में बहुत ही तेजी से उतार-चढ़ाव होता है जिससे इसकी कीमतें दिन में कई बार बदलती रहती हैं।

कृप्टो करेंसी कैसे काम करती है:- कृप्टो करेंसी असल में ब्लॉक-चेन तकनीक के माध्यम से काम करती है अर्थात इसकी लेन-देन का रिकॉर्ड रखा जाता है। साथ ही

पावरफुल कंप्यूटर द्वारा इसकी निगरानी की जाती है, जिसे कृप्टो करेंसी माइनिंग कहा जाता है और जिनके द्वारा यह माइनिंग की जाती है, उन्हें माइनर्स कहा जाता है।

जब कृप्टो करेंसी में कोई लेन-देन होता है तो उसकी जानकारी ब्लॉक-चेन में दर्ज की जाती है। अर्थात उसे एक ब्लॉक में रखा जाता है और इस ब्लॉक की सुरक्षा और इस कूटलेखन का काम माइनर्स का होता है। इसके लिए वे एक कृप्टोग्राफिक पहेली को हल कर ब्लॉक के लिए उचित एक कोड ढूंढते है।

जब कोई माइनर्स सही कोड ढूंढकर ब्लॉक को सुरक्षित कर देता है तो उसे पहले ब्लॉक चेन में जोड़ दिया जाता है और नेटवर्क में मौजूद अन्य कंप्यूटरों द्वारा उसे जांचा जाता है। इस प्रक्रिया को सहमति कहा जाता है। अगर सहमति में ब्लॉक सुरक्षा होने की पुष्टि हो जाती है और वह सही पाया जाता है तो सुरक्षित करने वाले माइनर को कृप्टो काइन्स दिए जाते हैं। यह दरअसल एक पुरस्कार होता है, जिसे कार्य का प्रमाण कहा जाता है।

कृप्टो करेंसी बाजार :- कृप्टो करेंसी बाजार अर्थात वह जगह जहाँ खरीद- फरोख्त होती है और ट्रेडिंग की जाती है। इसे कृप्टो करेंसी एक्सचेंज, डिजिटल करेंसी एक्सचेंज

(डीसीई), काइन मार्केट या कृप्टो जैसे नामों से भी जाना जाता है। यहाँ आप कोई भी कृप्टो करेंसी खरीद सकते हैं, बेच सकते हैं और निवेश भी कर सकते हैं जैसे कि मोनेरो, इथेरियम, बिट कॉइन, रेड कॉइन, कॉइट कॉइन, वॉयस कॉइन आदि।

कृप्टो करेंसी एक्सचेंज आमतौर पर क्रेडिट कार्ड, वायर ट्रॉन्सफर और अन्य डिजिटल माध्यम से पेमेंट स्वीकार करते हैं। यहाँ आप कागजी मुद्रा को कृप्टो करेंसी और कृप्टो करेंसी को कागजी मुद्रा में बदल सकते हैं। अगर बात करें टॉप कृप्टो करेंसी एक्सचेंज की तो इस लिस्ट में निम्न वेबसाइट प्रमुख है। जैसे कि बिनॉन्स, क्वाइबेस, बिटफिनेक्स, बिटहम्ब, बिटस्टॉम्प, बिटफ्लायर, क्यूकाइन, बिट्रेक्स, काइनवन, काइनचेक और कृप्टो.कॉम इत्यादि।

ये सिर्फ कुछ गिनती की कृप्टो करेंसी बाजार हैं जिनके बारे में लोग बहुत कम जानते हैं और इस्तेमाल भी करते हैं क्योंकि ये काफी प्रसिद्ध और विश्वसनीय मार्केट्स हैं लेकिन इनके अलावा भी सैकड़ों कृप्टो करेंसी बाजार हैं।

कृप्टो करेंसी के फायदे :- जब कृप्टो करेंसी के इस्तेमाल की बात आती है तो मन में यह सवाल जरुर उठता है कि आखिर क्यों कृप्टो करेंसी इस्तेमाल करें? इसके क्या-क्या फायदे हैं? तो मैं आपको बताना चाहूँगा कि कृप्टो करेंसी के कई सारे फायदे है जैसे कि -

* कृप्टो करेंसी एक डिजिटल करेंसी है और ऐसा माना जाता है कि इसमें धोखे की गुंजाइश कम है।

* कृप्टो करेंसी को खरीदना, बेचना और निवेश करना बहुत आसान है क्योंकि इसके लिए कई सारे डिजिटल वैलेट उपलब्ध हैं।

* कृप्टो करेंसी के लिए किसी बैंक की जरुरत नहीं है।

* कृप्टो करेंसी निवेश के लिए बहुत ही अच्छा विकल्प है क्योंकि इसकी कीमतों में तेजी से उछाल आता है।

* कृप्टो करेंसी को किसी भी राज्य अथवा सरकार द्वारा नियंत्रित नहीं किया जाता।

कृप्टो करेंसी के नुकसान :- हर चीज के दो पहलू होते हैं। कुछ फायदे होते है तो कुछ नुकसान भी होते हैं। ठीक यही बात कृप्टो करेंसी पर भी लागू होती है। अर्थात कृप्टो करेंसी के भी कुछ नुकसान हैं। आइए, जानते है कृप्टो करेंसी के नुकसान क्या-क्या हैं :-

* कृप्टो करेंसी का सबसे बड़ा नुकसान यह है कि इस पर किसी प्राधिकारी का नियंत्रण नहीं है अर्थात इसकी कीमतों को कोई नियंत्रण नहीं कर सकता। इसलिए इसकी कीमते अप्रत्याशित रुप से घटती-बढ़ती है।

* दूसरा नुकसान यह है कि यह एक डिजिटल करेंसी है। इसीलिए इसे हैक किया जा सकता है और इथेरियम के साथ ऐसा हो भी चुका है।

* तीसरा बड़ा नुकसान है-गैर कानूनी गतिविधियों में इसका इस्तेमाल किया जा सकता है अर्थात कृप्टो करेंसी को गैरकानूनी हथियार, ड्रग्स और चोरी के क्रेडिट /डेबिट कार्ड को खरीदने में किया जा सकता है।

* इसके अलावा कृप्टो करेंसी का कोई भौतिक अस्तित्व नहीं है। यह कागजी नोट और धातु के सिक्के के रुप में उपलब्ध नहीं हैं।

क्या कृप्टो करेंसी वैध हैं? अब सवाल यह है कि क्या कृप्टो करेंसी वैध है तो इसका जवाब 'हाँ' भी है और

'नहीं' भी। क्योंकि अलग-अलग देशों में अलग-अलग स्थिति है। कही ये पूरी तरह वैध तो कही पूरी तरह अवैध। ऐसे में हर देश के लिए इसका जवाब अलग है। पिछले एक-दो साल में कृप्टो करेंसी की लोकप्रियता और स्वीकार्यता दोनों बढ़ी है। ऐसे में हम अपने देश की बात करते है तो भारत में अब तक कृप्टो करेंसी वैध है।

सारांश:- सच पूछो तो कृप्टो करेंसी एक कंप्यूटर फाइल है, जो डिजिटल वैलेट में स्टोर रहती है। बिलकुल उसी तरह, जिस तरह एक MP3 फाइल हमारी फोन की गैलरी में सेव रहती है। यह एक इन्क्रिप्टेड फाइल होती है, जो कृप्टोग्राफी द्वारा सुरक्षित होती है। इसीलिए इसे कॉपी, एडिट, डिलीट और हैक नहीं किया जा सकता, ऐसा माना जाता है। भारतीय रिजर्व बॅक के गवर्नर शक्ति कांत दास ने 21 दिसंबर 2022 को कृप्टो करेंसी के बारे में बयान दिया है कि दुनिया में अगला वित्तीय संकट कृप्टो करेंसी की वजह से आएगा। उन्होंने यह भी कहा कि मुझे अभी लगता है कि कृप्टो करेंसी बैन कर देना चाहिए क्योंकि कृप्टो करेंसी में कोई अंतर्निहित मूल्य नहीं है। इन सब जानकारी को देखते हुए मुझे लगता है की कृप्टो करेंसी के दूरगामी परिणाम अभी आने बाकी है और इसे भविष्य में अवैध माना जा सकता है।

(श्री मेघराज मुंशीजी के लेख से साभार)

◆◆◆

कर्मफल

सौमित्रि दास
उप प्रबंधक (तकनीकी प्रचालन)

जब कर्ण के रथ का पहिया जमीन में फंस गया तो वह रथ से उतरकर उसे ठीक करने लगे। वह उस समय बिना हथियार के थे। भगवान कृष्ण ने तुरंत अर्जुन को बाण से कर्ण को मारने का आदेश दिया।

अर्जुन ने भगवान के आदेश को मान कर कर्ण को निशाना बनाया और एक के बाद एक बाण चलाए। जो कर्ण को बुरी तरह चुभता हुआ निकल गया और कर्ण जमीन पर गिर पड़े।

कर्ण, जो अपनी मृत्यु से पहले जमीन पर गिर गए थे, उसने भगवान कृष्ण से पूछा, ''क्या यह तुम हो, भगवान? क्या आप दयालु हैं? क्या यह आपका न्यायसंगत निर्णय है! एक बिना हथियार के व्यक्ति को मारने का आदेश?''

श्रीकृष्ण मुस्कुराए और उत्तर दिए, ''अर्जुन का पुत्र अभिमन्यु भी चक्रव्यूह में निहत्था हो गया था, जब तुम सभी ने मिलकर उसे बेरहमी से मार डाला था, आप भी उस में थे। तब कर्ण तुम्हारा ज्ञान कहाँ था? यह कर्मों का प्रतिफल है। यह मेरा न्याय है।''

अगर आज आप किसी को चोट पहुँचाते हैं, उनका तिरस्कार करते हैं, किसी की कमजोरी का फायदा उठाते हैं। भविष्य में वही कर्म आपकी प्रतीक्षा कर रहा होगा और वह स्वयं ही आपको प्रतिफल देगा।

◆◆◆

प्यार की भूख को दूर करना, रोटी की भूख से कहीं अधिक कठिन है। - मदर टेरेसा

सुखी जीवन का रहस्य

राजेश कुमार शाह
प्रबंधक (तकनीकी प्रचालन)

एक बार यूनान के मशहूर दार्शनिक सुकरात भ्रमण करते हुए एक नगर में गये। वहां उनकी मुलाकात एक वृद्ध सज्जन से हुई। दोनों आपस में काफी घुल मिल गये थे।

वृद्ध सज्जन आग्रहपूर्वक सुकरात को अपने निवास पर ले गये। उनका भरा-पूरा परिवार था। घर में बहु- बेटे, पौत्र-पौत्रियां सभी थे।

सुकरात ने वृद्ध से पूछा- 'आपके घर में तो सुख-समृद्धि का वास है। वैसे अब आप करते क्या हैं?' इस पर वृद्ध ने कहा- 'अब मुझे कुछ नहीं करना पड़ता। ईश्वर की दया से हमारा अच्छा कारोबार है, जिसकी सारी जिम्मेदारियां अब बेटों को सौंप दी हैं। घर की व्यवस्था हमारी बहुएं संभालती हैं। इसी तरह जीवन चल रहा है।'

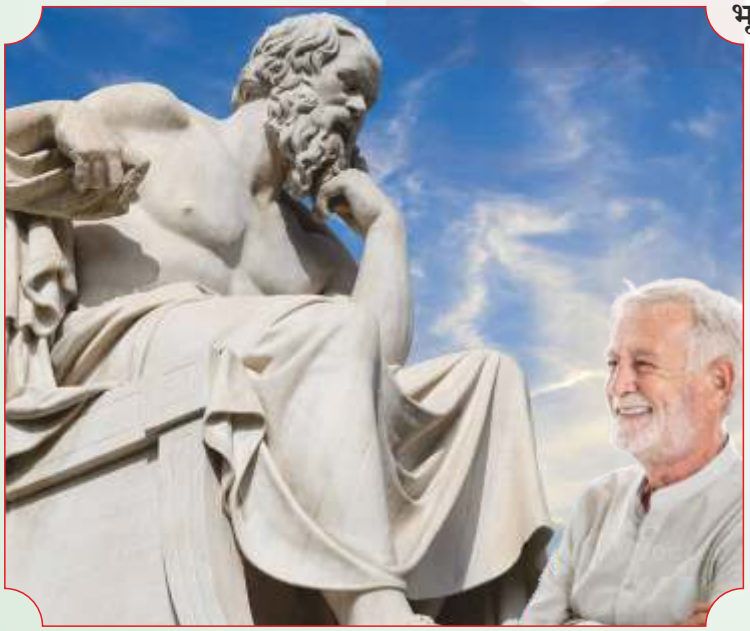

यह सुनकर सुकरात बोले-'किन्तु इस वृद्धावस्था में भी आपको कुछ तो करना ही पड़ता होगा। आप बताइये कि बुढ़ापे में आपके इस सुखी जीवन का रहस्य क्या है?'

वह वृद्ध सज्जन मुस्कुराये और बोले- 'मैंने अपने जीवन के इस मोड़ पर एक ही नीति को अपनाया है कि दूसरों से अधिक अपेक्षाएँ मत पालो और जो मिले, उसमें संतुष्ट रहो। मैं और मेरी पत्नी अपने पारिवारिक उत्तरदायित्व अपने बेटे- बहुओं को सौंपकर निश्चिंत हैं। अब वे जो कहते हैं, वह मैं कर देता हूँ और जो कुछ भी खिलाते हैं, खा लेता हूँ। अपने पौत्र-पौत्रियों के साथ हंसता-खेलता हूँ। मेरे बच्चे जब कुछ भूल करते हैं तब भी मैं चुप रहता हूँ। मैं उनके किसी कार्य में बाधक नहीं बनता। पर जब कभी वे मेरे पास सलाह-मशविरे के लिए आते हैं तो मैं अपने जीवन के सारे अनुभवों को उनके सामने रखते हुए उनके द्वारा की गई भूल से उत्पन्न दुष्परिणामों की ओर सचेत कर देता हूँ। अब वे मेरी सलाह पर कितना अमल करते है या नहीं करते हैं, यह देखना और अपना मन व्यथित करना मेरा काम नहीं है। वे मेरे निर्देशों को मानें, ऐसा मेरा आग्रह नहीं होता यदि परामर्श देने के बाद भी यदि वे भूल करते हैं तो मैं क्या कर सकता हूँ? यही मेरे सुखी जीवन का रहस्य है।

◆◆◆

आप दोस्त बदल सकते हैं, लेकिन पड़ोसी नहीं। - अज्ञात

मेहनत का फल

किरण वैद्य
उप प्रबंधक (तकनीकी प्रचालन)

एक आदमी था जो कॉन्वेंट स्कूल में पीरियड और छुट्टी का घंटा बजाता था।

एक दिन स्कूल के नए प्रिंसिपल की नजर उस पर गयी तो उससे उसके बारे में पूछ बैठे ''कितना पढ़े लिखे हो जी?''

आदमी ने बड़े मासूमियत से कहा ''साहब, अनपढ़ हूँ।''

प्रिंसिपल को यह जानकर हैरत हुई कि उनके इस प्रतिष्ठित स्कूल का घंटा बजाने वाला कर्मचारी अनपढ़ है।

उन्होंने कहा कि यह नहीं हो सकता और फिर उस घंटा बजाने वाले को स्कूल से निकाल दिया।

अब वो बेचारा क्या करे? कुछ काम नहीं था। भूखे मरने की नौबत, तो किसी ने उस पर दया करके सलाह दी कि वहाँ उस रास्ते पर समोसा बेचो, कुछ तो कमाई होगी।

फिर उसने समोसे बेचना शुरू किया।

ऊपर वाले की कृपा रही और उसकी जी तोड़ मेहनत से उसकी दुकान चल गई।

खोमचे से गुमटी हुआ, गुमटी से बड़ा दुकान, फिर बाजार की सबसे फेमस दुकान हो गया।

जब उसका धंधा आगे बढ़ा तो उसने अपने बच्चों को भी इस काम मे लगा दिया और अपने स्वयं दूसरे धंधे के लिए कोशिश करने लगा।

आगे चलकर वो शहर का सबसे बड़ा सेठ बन गया। उसके कई प्रतिष्ठान भी हो गए।

उसकी ख्याति सुनकर एक पत्रकार आया उसका इंटरव्यू लेने लगा।

अन्य बातों को पूछने के बाद उसने पूछा कि आप कहाँ तक पढ़े हैं?

पत्रकार को भी ये जानकर बड़ी हैरत हुई कि इतना बड़ा सेठ तो बिलकुल अनपढ़ है।

पत्रकार ने कहा कि आप पढ़े लिखे नहीं हैं फिर भी इतना बड़ा व्यापार किए, इतने सफल हो गए हैं।

मैं सोच रहा हूँ कि अगर आप पढ़े होते तो क्या कर रहे होते?

सेठ ने बहुत मासूमियत के साथ जवाब दिया - ''स्कूल में घंटा बजा रहा होता।'' ◆◆◆

सफलता का आनंद लेने के लिए कठिनाईयाँ आवश्यकता होती हैं। - ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

जहाँ चाह वहाँ राह

बिपिन रमेश चौधरी
उप प्रबंधक (तकनीकी प्रचालन-विद्युत)

मेरा स्वभाव बचपन से जिज्ञासु और कार्य -कारण के सिद्धांत को मानने वाला है और मैं बिना वैज्ञानिक प्रमाण के कुछ भी स्वीकार नहीं करना चाहता हूँ। बाद में मैंने अपनी पढ़ाई पूरी की एवं जीवन यापन के लिए नौकरी की तलाश में लग गया। तभी मेरे प्रयासों को पंख लगा और मुझे एक अच्छी कंपनी में नौकरी मिल गई परंतु उस कंपनी में काम करने के दौरान पता चला कि मेरे बॉस भी जिज्ञासु और कार्य -कारण के सिद्धांत को मानने वाले हैं। यह जानकर मुझे बहुत राहत महसूस हुई।

एक दिन मेरे बॉस ने मुझे फोन किया और कहा कि जोशी जी, आपको हमारे उन दों उत्पादों को परीक्षण के लिए अनुसंधान एवं विकास विभाग, कांजूर मार्ग, मुंबई लेकर जाना है जिनका हमने परीक्षण के लिए आर एंड डी किया था। यह सुनने के बाद मुझे उनके साथ हुई चर्चा याद आ गई क्योंकि उन्होंने आर एंड डी किए गए उत्पाद में जो परिवर्तन किए थे वे धातु विज्ञान से संबंधित थे और वे परिवर्तन किस वैज्ञानिक कारण से किए थे, मेरे बॉस मुझे किसी कारण वश बताना नहीं चाहते थे। शायद वे उस प्रयोग के माध्यम से मुझे संभावित सफलता या असफलता के लिए तैयार करने का मन बना लिया था।

खैर, बॉस के आदेश के अनुसार मुझे टेस्टिंग लैब, कांजूर मार्ग, मुंबई के लिए तुरंत निकलना पड़ा। मेरा सफर औरंगाबाद रेलवे स्टेशन से आरंभ होना था। इसलिए ट्रेन का सफर बिना बोरियत के काटने के लिए मैंने औरंगाबाद रेलवे प्लेट फॉर्म पर तेनाली राम की कहानी की किताब खरीद ली। ट्रेन आने तक उस किताब से मैंने 'राजा और तोता' की कहानी मैंने पढ़ ली। इस कहानी में राजा का पाला हुआ प्यारा तोता राजा के लिए जीवन और मृत्यु का सबब बना रहता है। राजा सेवकों से कहता है कि जो कोई भी यह संदेश भेजेगा कि यह तोता मर गया है, मैं उसे मौत की सजा दूंगा। एक दिन तोता मर गया था, लेकिन कोई भी राजा को यह बताने की हिम्मत नहीं कर रहा था। तेनाली राम एक होशियार सेवक था। वे राजा को खबर सुनाने जाते हैं। उसके चेहरे का भाव देखकर राजा उनसे पूछता है। ओह! क्या हुआ तेनाली ! राजा चिल्लाता है।

तेनाली : महाराज ! ...

राजा: अरे पागल, तोता बीमार है क्या?

तेनाली : सिर हिलाता है..

राजा: क्या तोता कुछ खाता है?

तेनाली : अपनी मुंडी हिलाकर ना कहता है।

राजा: ओह, क्या वह पानी भी पीता है?

तेनाली: अपना सिर हिलाकर ना कर देता है।

राजा: अरे मूर्ख, क्या वह मर गया?

तेनाली: मुंडी हिलाकर हाँ में जवाब देता है।

राजा: कहाँ है मेरी तलवार, इस तेनाली को मौत की सज़ा दी जाए।

तेनाली: महाराज, आपने स्वयं कहा कि तोता मर गया, मैंने तोते के मरने की बात नहीं कही तो मैं कैसे दोषी हो गया? मैं तो पूरी तरह से निर्दोष हूँ।

राजा को अपनी भूल का एहसास हुआ और उसने तेनाली राम की चतुराई की प्रशंसा करते हुए कहा कि 'तुमने आज मेरे हाथों को अनर्थ होने से बचा लिया। मैं तोते से इतना आसक्त हो गया था कि यह समझ ही नहीं पाया कि जीना और मरना ईश्वर के हाथों में है। इसमें किसी भी व्यक्ति की कोई भूमिका नहीं होती। अगर तोते की मृत्यु की खबर कोई और कर्मचारी देता तो भावावेश में मैं शायद उसके प्राण ले लेता जो कि पूरी तरह अनुचित कार्य होता। तुमने मुझे इस अपयश से बचा लिया।

इस कहानी को पढ़कर मैं मन ही मन तेनाली राम की चतुराई पर मनमुग्ध हो गया और कब आँख लग गई, पता ही नहीं चला।

बहरहाल, अगले दिन मैं अपने टेस्टिंग लैब के मुख्य अभियंता और टीम के साथ सुबह 9 बजे से शाम 4 बजे तक परीक्षण का कार्य पूरा किया। जैसा कि मुझे उम्मीद था कि उत्पाद का बाहरी भाग ठीक था, परंतु उत्पाद परीक्षण के दौरान फेल हो गया क्योंकि उत्पाद के अंदर तांबे और क्रोमियम के मिश्र धातु के विद्युत कंडक्टर पूरी तरह से वाष्पीकृत हो गए थे।

बाद में जब शाम के 6 बजे हम आर एंड डी लैब से निकल रहे थे तब चीफ इंजीनियर श्रीसुब्बा राजू (जो मेरे बॉस के स्वभाव और कार्यशैली से परिचित थे) ने मुझसे पूछा कि आप यह असफलता अपने बॉस को कैसे बताओगे? क्योंकि यह प्रोजेक्ट मेरे बॉस के लिए बहुत महत्वपूर्ण था जो उनके प्रमोशन में सहायक होने वाला था।

फिर अचानक मुझे ट्रेन में तेनाली राम की पढ़ी हुई कहानी याद आ गई। मैंने चीफ इंजीनियर श्री सुब्बा राजू सर से कहा 'सर मैं आपके सामने बॉस को फोन पर बताता हूँ, आप सुनिए...।'

मैं: गुड इंवनिंग सर।

बॉस: हेलो मिस्टर जोशी। उत्पाद का परीक्षण कैसा रहा?

मैं: सर, परिणाम उत्साहजनक है।

बॉस: बधाई हो, इसे जारी रखो।

मैं: सर क्या मैं प्रोडक्ट और टेस्ट रिपोर्ट ला सकता हूँ।

बॉस: तुम तुरंत फैक्टरी से निकल आओ और रिपोर्ट एवं टेस्टेड प्रोडक्ट बाद में आ जाएगा। हम तुम्हारा इंतजार कर रहे हैं।

मैं: ओ के सर। और मैंने फोन रख दिया।

राजू साहब हँसने लगे और बोले 'जोशी जी आप ने कैसे कहा, परिणाम उत्साहजनक हैं? जबकि उत्पाद तो परीक्षण में फेल हो गया है।'

फिर मैंने राजू सर को तेनाली राम की तोते और राजा की पूरी कहानी सुनाई और कहा 'सर, मैं राजा को कैसे बता सकता हूँ कि तोता मर गया है? जब मैं इस परीक्षण किए हुए उत्पाद को कारखाने में ले जाऊंगा और बॉस उन्हें

विश्लेषण के लिए तोड़ेंगे तो वे स्वयं देखेंगे कि परियोजना विफल हो गई। इस प्रकार मैं उनके अनावश्यक क्रोध से बच जाऊँगा और वे भी उत्पाद में आए दोष को स्वयं अपनी आँखों से देख कर संतुष्ट हो जाएंगे कि इसमें किसी की कोई गलती नहीं है। मेरे इस कथन पर राजू सर मन ही मन मुस्कुरा उठे और मुझे आशीर्वाद देते हुए विदा किया।

मैं जब अगली सुबह फैक्ट्री पहुँचा और मुझे उत्पाद के सफल परीक्षण की कहानी कंपनी के वाइस प्रेसिडेंट के सामने प्रस्तुत करने के लिए कहा गया तो मैं सीधे अपने बॉस के पास गया और उनसे कहा कि 'सर,जब परीक्षण किए हुए उत्पाद औरंगाबाद फैक्टरी में कूरियर से पहुँच जाएगा तब हम उत्पाद का एक्स-रे करेंगे और प्रस्तुति देंगे। मेरे बॉस को मेरा यह विचार पसंद आया। अगले दो दिन बाद हमें जैसे ही उत्पाद प्राप्त हुआ। उनके प्रिय उतावले अधिकारी को एक्स-रे लेने के लिए भेजा गया। उसने परीक्षण मे फेल हुए उत्पाद का एक्स-रे एक डेंन्टिस्ट के लैब से निकालकर बॉस को दिखाया।

इस रिपोर्ट को देखने के बाद, मुझे मेरे बॉस ने बुलाया और धीमी आवाज में कहा कि उत्पाद में कॉपर और क्रोम पूरा वाष्पीकृत हो गया है। इसलिए इस प्रयोग और रिपोर्ट की बात किसी को मत बताओ क्योंकि प्रोजेक्ट विफल हो गया।

मैंने कहा, 'सर कोई बात नहीं, फिर से प्रयास करते हैं।'

बॉस ने खुश होते हुए कहा 'जोशी जी आज से आप भी इस टीम में रहेंगे और इस प्रोजेक्ट पर साथ में काम करेंगे।'

मैं मन ही मन तेनाली राम को धन्यवाद देते हुए सोचने लगा यदि औरंगाबाद प्लेट फॉर्म पर तेनाली राम की किताब मेरे हाथ नहीं लगी होती और यदि मैं राजा और तोते की कहानी नहीं पढ़ा होता तो शायद मैं अपनी नौकरी खो चुका होता और नौकरी की तलाश में भटक रहा होता। ◆◆◆

लक्ष्मीकांत भट्ट
परामर्शदाता (सुरक्षा)

याद रखो

पथ पर काँटे हो सकते हैं,याद रखो ।
अपने उर में सभी तरह के, नाद रखो।
मिलें राह में पाथर भी यदि, ह्रास करो ।
चाहे सुख हों या विषाद, तुम रास करो।
देखो दिन भी ढल जाता है, बात सही ।
पल आयेगा तुम कह दोगे, रात गई ।
चलते जाओ बस मंजिल की, बात करो ।
अपने उर में सभी तरह के, नाद रखो।
कभी मिलेगा पतझड़ भी, बस गान करो ।
फिर आयेगी मधुऋतु, यह भी ध्यान करो ।
रसना में तुम सदा विजय के, फाग रखो ।
अपने उर में सभी तरह के, नाद रखो।
अरे पुरातन बीत रहा है, ध्यान धरो ।
नव संवत्सर आयेगा, नव गान करो ।
भूल पुरातन गीतों में, नव नाद रखो ।
पथ पर काँटे हो सकते हैं, याद रखो।

योग हमें उन चीजों को ठीक करना सिखाता है, जिन्हें ठीक नहीं किया जा सकता है। - बी.के.एस. आयंगर

सकारात्मक सोच

सौरभ श्रोती
सहायक प्रबंधक (तकनीकी प्रचालन)

यह कहानी एक दिव्यांग राजा की है जिसके राज्य में कोई भी परेशानी या समस्या नहीं थी। सभी लोग उस राजा से बहुत खुश थे और ईश्वर का धन्यवाद करते थे कि उन्होंने इतना अच्छा राजा उनकी जिंदगी में भेजा है। वह राजा दिव्यांग था और उसकी एक आँख और एक पैर नहीं था लेकिन फिर भी राजा को इस बात का कोई मलाल नहीं था।

एक दिन राजा अपने महल के गलियारे में घूमते हुए अपने पूर्वजों की लगी तस्वीर को देख रहा था और सोच रहा था कि मेरे पिताजी शूरवीर थें और मेरे दादाजी भी शूरवीर थें। मुझे इतने शूरवीर खानदान में जन्म लेने का मौका मिला। यह मेरा परम सौभाग्य है। राजा सभी चित्रों को देखते हुए आखिरी चित्र तक पहुँचा और अंत में एक खाली जगह को देखा तो वह चिंता में पड़ गया क्योकि उसे मालूम था कि अब यहाँ जो तस्वीर लगेगी वह उसी की लगेगी। लेकिन राजा को इस बात की चिंता नहीं थी कि वह मर जायेगा, चिंता इस बात की थी कि वहाँ जो तस्वीर लगेगी वह देखने में कैसी लगेगी।

राजा का एक आँख और एक पैर ना होने की वजह से वह चिंता में पड़ गया और सोचने लगा की इस गलियारे में इतनी शानदार तस्वीर लगी है लेकिन मेरी एक आँख और एक पैर न होने की वजह से मेरी ही तस्वीर सबसे खराब लगेगी और सबसे भद्दी दिखेगी। राजा ने सोचा की मेरे मरने के बाद पता नहीं कैसी तस्वीर बनेगी और कैसी दिखेगी, क्यों ना मैं अपने जीते-जी ही एक शानदार पेंटिंग बनवाऊ ताकि मुझे ये सुकून मिल जाये की मेरी यहाँ अच्छी पेंटिंग लगेगी।

यह बात दिमाग में आते ही राजा ने अपने राज्य में यह ऐलान करवा दिया गया कि जो भी चित्रकार उसकी सबसे अच्छी पेंटिंग बनाएगा उसे मुँहमांगा ईनाम दिया जाएगा। यह घोषणा सुनकर राज्य के सभी पेंटर राजमहल में आए और अपना हुनर दिखाने के लिए राजा की पेंटिंग बनाने के कार्य में जुट गए। चित्रकारों की सबसे बड़ी परेशानी यह थी कि जिस राजा का एक आँख नहीं है एक पैर नहीं है उसका शानदार पेंटिंग कैसे बने। चित्रकार यह भी सोच रहे थे कि अगर राजा की पेंटिंग अच्छी नहीं बनी तो ईनाम तो छोड़ों, कहीं दंड के पात्र न बन जाएं। चित्रकारों का ऐसा सोचना उचित भी था। ऐसी परिस्थिति में बड़े-बड़े चित्रकार भी राजा की पेंटिंग बनाने से कतराने लगे। इससे राजा को बहुत दुख पहुँचा। राजा सोचने लगा कि क्या महल की वह दीवार उनके जाने के बाद वैसे ही सूनी रह जाएगी, क्या कोई ऐसा चित्रकार नहीं है जो उनकी सुंदर पेंटिंग बना सके और उन्हें संतुष्ट कर सके। राजा बहुत व्यग्र हो उठे। तभी राजा के समक्ष एक लड़का आया और उसने राजा से उनकी पेंटिंग बनाने की अनुमति मांगी। उसने राजा से उनका चित्र बनाने के लिए 24 घंटे का समय मांगा। राजा ने सोचा जब उनका चित्र बनाने के लिए राज्य के बड़े-बड़े चित्रकार भी आगे

कला सौंदर्य के माध्यम से दिया गया सत्य है। - महादेवी वर्मा

नहीं आये तो भला यह बालक उनका चित्र क्या बनाएगा? राजा ने अनमने ढंग से उस लड़के को अपना चित्र बनाने की अनुमति दे दी और बुझे मन से महल के भीतर आराम करने के लिए चले गए।

राजमहल के मुख्य सचिव को इस लड़के पर बहुत दया आ ही थी कि अगर राजा का चित्र उनके मन के अनुसार नहीं बनी तो कहीं यह बालक राजा के क्रोध का शिकार न हो जाए। इसके अतिरिक्त राज्य के सभी बड़े-बड़े पेंटर हैरान हो गए कि देखते हैं यह लड़का राजा की कैसी तस्वीर बनाता है और अगर राजा को इसकी पेंटिंग पसंद नहीं आयी तो इसे राजा क्या सजा देते हैं?

अगले दिन वह लड़का राजा की तस्वीर बनाकर लाने वाला था और उसे देखने के लिए राजा का दरबार राज्य के लोगों से खचाखच भरा हुआ था। इंतजार की घड़ियाँ समाप्त हुई और वह लड़का राजा की तस्वीर बनाकर ले आया। जब लोगों ने उस लड़के द्वारा बनाई गई तस्वीर देखी तो सभी लोग आश्चर्यचकित रह गए और सब लोग खुशी के कारण जोर-जोर से तालियाँ बजाने लगे। कई लोग इतने खुश हो गए कि सब कुछ भूलकर राज दरबार में ही सिटी बजाने लगे। राजा को बहुत आश्चर्य हुआ कि उस लड़के ने ऐसा क्या बना दिया कि लोग करतल ध्वनि कर रहे है। जब राजा ने उस पेंटिंग को देखा तो वह बहुत खुश हो गया और खुशी के कारण उसकी आँखें भर आई। उसके मुँह से केवल एक शब्द ही निकला 'वाह! इससे अच्छी पेंटिंग तो इस पूरे राज गलियारे में नहीं है।' राजा ने उस लड़के को मुँह मांगा ईनाम दिया और उसे राज दरबार में एक सम्मानीय पद भी प्रदान किया।

अब आप सोच रहे होंगे कि आखिर उस लड़के ने

राजा की ऐसी कौन सी तस्वीर बनाई कि राजा और प्रजा दोनों बहुत प्रफुल्लित हो गए क्योंकि उस राजा की एक आँख और एक पैर नहीं थे।

उस तस्वीर में लड़के ने राजा को एक घोड़े पर सवार दिखाया था। एक ओर से राजा का एक पैर दिख रहा था और राजा तीरंदाजी करते हुए युद्ध के मैदान में शत्रुओं पर निशाना लगा रहा था और निशाना लगाते वक्त उसकी एक आँख बंद थी। उस लड़के ने राजा की वही आँख बंद की थी जो राजा के पास नहीं थी। इस तरह उस लड़के ने राजा की वीरता, शौर्य एवं पराक्रम को दर्शाते हुए एक ऐसी तस्वीर बनाई जो राज गलियारे की सर्वश्रेष्ठ पेंटिंग बन गई।

यह कहानी हमें यह शिक्षा देती है कि हमारे सामने चाहे जैसी भी चुनौती हो अगर हम शांत एवं सकारात्मक रहें तो हम उस कठिन परिस्थिति में भी शानदार प्रदर्शन कर सकते हैं। इसलिए जिंदगी में उम्मीद का साथ कभी मत छोड़िये क्योंकि उम्मीद के साथ हम कठिन से कठिन परिस्थिति से भी बाहर निकल सकते हैं और दूसरों के लिए प्रेरणा स्त्रोत बन सकते हैं।

◆◆◆

एक आदर्श परिवार

जी. एम. गणेश बाबु
कार्यालय सहायक (मा.सं.)

हम जानते हैं कि हमारे समाज में दिन प्रतिदिन शिशु देखभाल केंद्र एवं वृद्धाश्रम की संख्या बढ़ती जा रही है। परिवार में दो भाईयों एवं बहनों के बीच में संपत्ति एवं अन्य कारणों से आए दिन आपस में झगड़ा होता रहता है। वर्तमान पीढ़ी को आपस में अपने माता-पिता एवं भाई-बहनों का सम्मान करने के तरीकों को पौराणिक कथाएँ सुनाकर शिक्षा देनी चाहिए जो हम अपने व्यस्त जीवन में इस प्रकार की शिक्षा नहीं दे पा रहे हैं। इस संबंध में

भाग-1 में पौराणिक कथाओं में एक आदर्श परिवार जिसमें एक पिता ने अपने विकलांग पुत्र को सूर्य का सारथी बना दिया तथा एक पुत्र ने अपनी माता को कई वर्षों के दासता से मुक्त कराया तथा

भाग-2 में एक भाई अपने बड़े भाई का सम्मान भी करता है तथा अपने कर्तव्य का निर्वाह भी करता है। जिसे नीचे दिए गए कहानी से भली-भाँति समझा जा सकता है। कहानी इस प्रकार है:-

भाग-1: विनता ऋषि कश्यप की पत्नी थी जो सभी सुख-सुविधाओं से सम्पन्न थी। कद्रू जो विनता की बहन थी जिसको 1000 नाग पुत्र या सर्प पुत्र चाहिए था जबकि विनता को दो पुत्र चाहिए था जो कद्रू के बच्चों से अधिक शक्तिशाली हों। बाद में कद्रू ने एक हजार अंडों को जन्म दिया, जिससे 1000 पुत्र निकले। कद्रू एक हजार सांपों की मां बन जाती है। जबकि विनता ने दो अंडों को जन्म दिया। अपने पुत्रों के लिए उत्सुक विनता ने ईर्ष्या वश उन अंडों में से एक को तोड़ दिया जिसमें से आंशिक रूप से बना अरुण निकला। चूंकि अरुण समय से पहले पैदा हुए थे। इसलिए उनका शरीर पूरी तरह से विकसित नहीं था। अपनी माँ की जल्दबाजी को देखते हुए क्रोधित होकर, उन्होंने आपनी माँ को श्राप दिया कि वह कई वर्षों तक कद्रू की दासी बनी रहेगी जब दूसरा अंडा फूटेगा तब उसका दूसरा पुत्र उसे छुड़ा लेगा। इस प्रकार अरुण द्वारा अपनी माता को श्राप देने की घटना पर सहानुभूति दिखाते हुए उनके पिता प्रजापति कश्यप ने अरुण

को सूर्य का सारथी बनने का वरदान दिया था।

विनता, कद्रू और उसके बच्चों की सेवा करने लगी और धैर्यपूर्वक अपने दूसरे पुत्र के जन्म की प्रतीक्षा करने लगी। एक दिन दूसरे अंडे से गरुड़ निकले। उनके पास एक इंसान का शरीर था लेकिन एक बाज के पंख, पंजे और चोंच थी। अलौकिक शक्तियों से संपन्न, गरुड़ कुछ ही मिनटों में विशाल आकार का हो गया। चूँकि उसकी माँ एक दासी थी। इसलिए गरुड़ को भी कद्रू और उसके सर्प पुत्रों की सेवा करनी पड़ी। जब उसने अपनी माँ से इस बारे में पूछा तो विनता ने बताया कि कैसे उसके साथ धोखा हुआ है। हालांकि नाराज गरुड़ जानते थे कि उन्हें अपनी आजादी जीतने के लिए अपना समय देना होगा।

एक बार, जब कद्रू और उसके पुत्र एक द्वीप पर जाना चाहते थे, तब विनता ने कद्रू को अपने कंधों पर बैठाकर पानी में तैर कर पार कराया। जबकि गरुड़ को साँपों को ढोना पड़ा । गरुड जान-बूझकर सूर्य के निकट उड़ रहे थे। तब सर्प गर्मी से झुलस गए। उनकी चीख सुनकर कद्रू ने इंद्र से प्रार्थना की, तब इंद्र ने सांपों को बचाने के लिए ठंडी बारिश कर दी।

तब गरुड़ ने सांपों के साथ सौदा करने का फैसला किया। उसने कहा, ''मेरी माँ को तथा मुझे आजाद कर दो, और जो कुछ तुम माँगोगे मैं तुम्हें दूँगा।' साँपों को पता था कि गरुड़ बहुत शक्तिशाली थें। साँपों ने गरुड से कहा कि यदि वे उनके लिए अमरता का अमृत ला सकते हैं, तो साँप गरुड की माँ और गरुड दोनों को मुक्त कर देंगे।'

गरुड़ जानते थे कि यह एक जोखिम भरा प्रस्ताव है, लेकिन वे मान गए। गरुड ने यह बात अपनी माता विनता को बताया, जिसने उसे आशीर्वाद दिया और उसे अपने रास्ते पर भेज दिया। गरुड़ पहले हिमालय गए, जहा उनकी मुलाकात ऋषि कश्यप से हुई। उसने अपने पिता को अपनी माँ की दासता और साँपों द्वारा निर्धारित स्वतंत्रता की कीमत के बारे में बताया । ऋषि कश्यप ने गरुड़ को एक विशाल हाथी और एक विशाल कछुआ पकड़ने की सलाह दी जो कई वर्षों से एक दूसरे से लड़ रहे थे। 'उन दोनों को खाओ, इससे तुम्हें वह शक्ति मिलेगी जिसकी तुम्हें आवश्यकता है, 'ऋषि ने उसे आशीर्वाद देते हुए कहा।'

गरुड़ ने उसी दिशा में उड़ान भरी। दोनों राक्षस जानवर लड़ने में इतने व्यस्त थे गरुड़ ने उन दोनों को अपने पंजे में उठा लिया। प्रत्येक को पंजे में पकड़कर पेड़ पर खाने के लिए बैठ गए लेकिन उसके भार से शाखा टूट गई। जैसे ही शाखा टूटी तब भयभीत गरुड़ ने देखा कि उसमें कुछ ऋषि लटके हुए थे। उसने तुरंत उसके नीचे झपट्टा मारा और उसे अपनी चोंच से पकड़ लिया। वलखिला ऋषि के सलाह पर, गरुड ने उस शाखा को पहाड़ की चोटी पर रख दिया। जब ऋषि, गरुड को आशीर्वाद देकर चले गए, तब उन्होंने हाथी और कछुए को खा लिया। अब उन्हें अमृत के लिए अमरावती जाना था।

जैसे ही गरुड़ आकाशीय नगरी की ओर उड़े, तब देवताओं को आशंका हुई कि कोई घटना होने वाली है। देवताओं के राजा इंद्र, अपने गुरु बृहस्पति के पास गए और पूछा, 'इतने परेशान क्यों हैं?' 'बृहस्पति ने उत्तर दिया,' 'यह गरुड़ है । वह अमृत का घड़ा लेने आ रहा है। इंद्र घबरा गए। इन्द्र जानते थे कि अगर ऋषि कश्यप ने हस्तक्षेप नहीं किया तो गरुड़ उसकी जगह ले लेंगे। भगवान बृहस्पति ने गरुड़ को रोकने की बहुत कोशिश की लेकिन गरुड़ ने अमृत का घड़ा छीन लिया।

गरुड़ ने नागों को अमृत पिलाने के लिए कद्रू के महल में जाने की यात्रा शुरू किया। 'उन्होंने खुद अमृत पीने के बारे में सोचा भी नहीं था, 'भगवान विष्णु ने सोचा, जो

देवताओं के साथ युद्ध देख रहे थे।' उसने पुकारा, 'गरुड़, रुक जाओ!' गरुड़ ने तुरंत रुक कर उन्हें प्रणाम किया। 'मैं तुम पर बहुत प्रसन्न हूँ,' विष्णु ने कहा। 'मैं तुम्हें दो वरदान देना चाहता हूँ तब गरूड ने पहला वरदान मांगा कि वह अमर और रोग मुक्त होना चाहते थे, जिसे मंजूर कर लिया गया। दूसरे वरदान के लिए उन्होंने भगवान विष्णु से कहा कि 'मैं आपसे ऊपर होना चाहता हूँ।' भगवान विष्णु मुस्कुराए और कहा, 'पहले अपने आप को छोटा कर लो।' गरुड़ ने अपने विशाल शरीर को सिकुड़ लिया। विष्णु ने अपने बराबर लंबा डण्डा निकाला और उन्होंने कहां, 'अब इस डण्डे के ऊपर बैठो।' जब गरुड़ ने आज्ञा मानी, तो उन्होंने कहा, 'अब, तुम मुझसे ऊपर हो।' गरुड़ हंसे और नीचे उतरे। तब गरूड ने भगवान विष्णु से कहा कि मैं भी आपको एक वरदान देना चाहता हूं, तब भगवान विष्णु ने कहा कि यदि तुम मुझे वरदान देना चाहते हो तो मेरा वाहन बनो और मुझे हर जगह ले जाओ। गरुड़ ने सहमति व्यक्त की लेकिन कहा, 'मैं सबसे पहले यह अमृत साँपों को दूंगा और मैं अपनी माँ को मुक्त कराऊंगा। फिर आपके पास वापस आऊंगा।'

गरुड़ अमृत लेकर उड़ गए। जब वह उनके आवास पर पहुंचा तो उसने सांपों को वह अमृत का बर्तन दिखाया। अति प्रसन्न होकर, उन्होंने तुरंत विनता और गरुड़ को मुक्त कर दिया। अब योजना को अमल में लाने का समय आ गया था। गरुड़ ने बर्तन को कुशा घास के बिस्तर पर रखा और चालाकी से सुझाव दिया, 'क्या आप सभी को अमृत पीने से पहले स्नान और शुद्ध नहीं होना चाहिए?'

सर्पों ने सुझाव स्वीकार कर लिया और नदी में स्नान करने चले गए। जब सभी सर्प चले गए, तब इंद्र जो एक अदृश्य दर्शक थे, उन्होने तुरंत अमृत का घड़ा उठा लिया। और गरूड को धन्यवाद दिए। मैं तुम्हारी इच्छा पूरी करूंगा। गरुड़ सोचे कि वह क्या चाहते हैं। यह सब केवल इसलिए हुआ क्योंकि कद्रू और उसके पुत्रों द्वारा उसकी माँ के साथ बुरा व्यवहार किया गया था। उन्हें सबक सिखाना ही था। उन्होंने कहा, 'आगे से साँपों को मेरा प्राकृतिक भोजन बनने दो।' इंद्र ने इच्छा पूरी की और नागों से अमृत को बचाकर इंद्र अमृत स्वयं लेकर चले गए। गरुड़ ने भी अपनी माता को पीठ पर उठा लिया और उड़ गए।

जब सर्प वापस आए तो उन्होंने अमृत को गायब पाया। यह आशा करते हुए कि कुछ बूँदें नीचे गिर गई थी। उन्होंने कुशा घास को चाटा लेकिन उसके तेज ब्लेड ने उनकी जीभ कट गई। इसलिए, किवदंती है, कि तब से सांपों की जीभें फटी होती।

भाग-2: एक बार सत्यभामा की इच्छा पूरी करने के लिए भगवान श्री कृष्ण और पत्नी सत्यभामा गरुड़ वाहन में पारिजात को लाने के लिए स्वर्ग जा रहे थे। स्वर्ग जाने के रास्ते में गरुड़ के भाई अरुण जो अपने पिता जी के वरदान से सूर्य के रथ सारथी बन गए थे। वे उस दिन सूर्य भगवान को सारथी बनकर ले आ रहे थे जो गरुड़ के सामने आते हुए दिखाई दे रहे थे। गरुड़ दुविधा में फस गए। एक तरफ कृष्ण भगवान और सत्यभामा को लेकर तेजी से स्वर्ग जा रहे थे। अगर गरुड़ अपनी चाल को कम करते तो सत्यभामा नाराज हो जाती और दूसरी तरफ अपने भाई अरुण जो सूर्य भगवान को सारथी बनकर आ रहे थे, उनका सम्मान किए बिना आगे भी नहीं बढ़ सकते थे।

इसी दुविधा में अचानक गरुड़ के दिमाग में विचार आया कि सूर्य भगवान के रथ का तेजी से एक चक्कर लगाकर प्रणाम करके आगे बढ़ गए। इस प्रकार गरुड़ ने अपने कर्तव्य का निर्वाह भी किए तथा अपने बड़े भाई का सम्मान भी किए।

महर्षि व्यास द्वारा रचित गरूड पुराण से साभार ◆◆◆

जो लोग किसी भी कारण से मरने के लिए तैयार हैं, वे शायद ही कभी पराजित होते हैं। - अटल बिहारी वाजपेयी

राजभाषा हिंदी की संवैधानिक स्थिति

अशोक कुमार श्रीवास्तव
परामर्शदाता (राजभाषा)

भारतीय संविधान के भाग 5, भाग 6 एवं भाग 17 में राजभाषा की संवैधानिक स्थिति के संबंध में व्यवस्था की गई है।

भाग 5 के अनुच्छेद 120 में संसद में प्रयुक्त होने वाली भाषा के संबंध में उल्लेख किया गया है। इस अनुच्छेद में किए गए प्रावधान के अनुसार संसद में कार्य हिंदी अथवा अंग्रेजी में किया जाएगा। राज्यसभा का सभापति या लोकसभा का अध्यक्ष किसी सदस्य को जो हिंदी या अंग्रेजी में अपनी अभिव्यक्ति नहीं कर सकता है तो उसे अपनी मातृभाषा में सदन को संबोधित करने हेतु आज्ञा दे सकते हैं।

भाग 6 के अनुच्छेद 210 में विधानमंडल में प्रयुक्त होने वाली भाषा के संबंध में उल्लेख किया गया है। विधानमंडल में कार्य, राज्य की राजभाषा या भाषाओं या हिंदी या अंग्रेजी में किया जाएगा। इसके अंतर्गत यदि कोई सदस्य उपरोक्त भाषाओं में अपनी अभिव्यक्ति नहीं कर सकता है तो उसे अपनी मातृभाषा में विधान परिषद को संबोधित करने का अधिकार है।

भाग 17 के अनुच्छेद 343 से 351 तक हिंदी को संघ की राजभाषा घोषित करने एवं इसे लागू होने के समय के संबंध में उल्लेख किया गया है जिसमें अनुच्छेद 343 एवं 351 महत्त्वपूर्ण है।

अनुच्छेद 343 (1) में यह कहा गया है कि हिंदी संघ की राजभाषा होगी तथा लिपि देवनागरी होगी। संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग में आने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतर्राष्ट्रीय रूप होगा।

अनुच्छेद 343 (2) में यह उल्लेख है कि संविधान के प्रारम्भ से 15 वर्ष तक सरकारी कार्यों में अंग्रेजी का प्रयोग वैसे ही होता रहेगा जैसे संविधान के प्रारम्भ से ठीक पहले होता था लेकिन उपरोक्त अवधि के दौरान राष्ट्रपति आदेश द्वारा अंग्रेजी भाषा के अतिरिक्त हिंदी भाषा तथा भारतीय अंकों के अंतर्राष्ट्रीय रूप के अतिरिक्त देवनागरी रूप का प्रयोग किया जा सकेगा।

अनुच्छेद 343 (3) में यह कहा गया है कि यदि संसद चाहे तो 15 वर्ष की अवधि के बाद भी अंग्रेजी भाषा या अंकों के देवनागरी रूप का प्रयोग कर सकेगी।

अनुच्छेद 351 में यह उल्लेख किया गया है कि संघ का कर्तव्य होगा कि वह हिंदी भाषा का प्रचार-प्रसार बढ़ाए एवं उसका विकास करे ताकि वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके। शब्द भंडार के लिए मुख्यतः संस्कृत से और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित किया जाए।

राजभाषा अधिनियम 1963 यथा संशोधित 1967

धारा 3 (3) :- यह धारा अति महत्वपूर्ण है। इस धारा के अंतर्गत आने वाले 14 दस्तावेज हिंदी और अंग्रेजी में जारी किए जाएंगे। दस्तावेजों की सूची इस प्रकार है :-

1 सामान्य आदेश, 2 सूचना, 3 अधिसूचना, 4 संकल्प, 5 प्रेस विज्ञप्ति, 6 संविदा, 7 करार 8 लाइसेन्स, 9 परमिट, 10 टेंडर नोटिस / टेंडर फार्म, 11 संसद में प्रस्तुत किए जाने वाले रिपोर्ट, 12 संसद में प्रस्तुत किए जाने वाले अन्य कागजात, 13 नियम, 14 प्रशासनिक या अन्य रिपोर्ट।

धारा 4 में राजभाषा के संबंध में समिति बनाने के

क्रांति मानव जाति का एक अविभाज्य अधिकार है। स्वतंत्रता सभी का अविनाशी जन्मसिद्ध अधिकार है। - भगत सिंह

संबंध में उल्लेख किया गया है।

जिस तारीख को धारा 3 प्रवृत्त होती है अर्थात 26 जनवरी 1965 से 10 वर्ष की समाप्ति के बाद राजभाषा के संबंध में एक समिति गठित की जाएगी जो संसद के किसी एक सदन में राष्ट्रपति की पूर्व मंजूरी से प्रस्तावित तथा दोनों सदनों द्वारा पारित की जाएगी।

इस समिति में 30 सदस्य होगे जिनमे से 20 लोकसभा तथा 10 राज्यसभा के सदस्य होगे। लोक सभा एवं राज्यसभा के सदस्यो के आनुपातिक प्रतिनिधित्व पद्धति के अनुसार एकल संक्रमणीय मत द्वारा निर्वाचित होंगे।

इस समिति का कर्तव्य होगा कि वह संघ के सरकारी

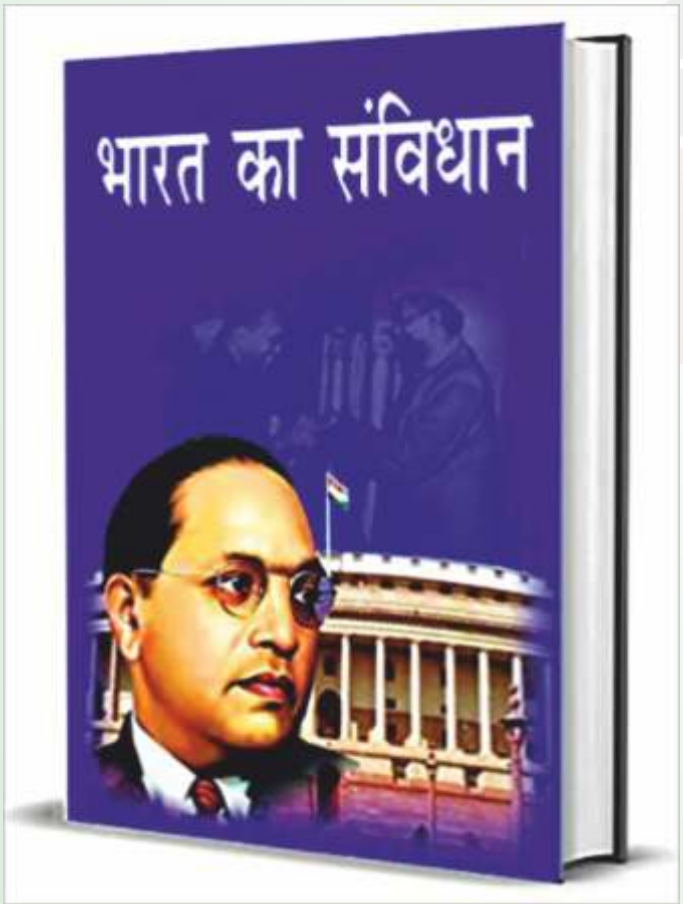

प्रयोजनों के लिए हिंदी के प्रयोग में की गई प्रगति की पुनः समीक्षा करें और उस पर सिफारिश करते हुये राष्ट्रपति को प्रतिवेदन करे और राष्ट्रपति द्वारा उस प्रतिवेदन को संसद के दोनों सदनों के समक्ष विचार के लिए प्रस्तुत किया जाएगा।

केन्द्रीय सरकार इस अधिनियम के प्रयोजनों को कार्यान्वित करने के लिए शासकीय राजपत्र में अधिसूचना द्वारा नियम बना सकेगी।

राजभाषा अधिनियम 1963 यथा संशोधित 1967 की धारा 8 में दिए गए प्रावधानों के अनुसार राजभाषा नियम 1976 बनाया गया।

राजभाषा नियम 1976 यथा संशोधित 1987 :- राजभाषा नियम 1976 यथा संशोधित 1987 के उपनियम 2 के अनुसार भारत को राजभाषा की दृष्टि से 03 भागों क, ख, एवं ग क्षेत्रों में बांटा गया है।

'क' क्षेत्रः- उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्यप्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, झारखंड, छत्तीसगढ़, दिल्ली एवं अंडमान निकोबार दीप समूह संघ राज्य क्षेत्र।

'ख' क्षेत्रः- पंजाब, गुजरात, महाराष्ट्र एवं चंडीगढ़, दमन और दीव तथा दादरा एवं नगर हवेली संघ राज्य क्षेत्र।

'ग' क्षेत्र :- उपरोक्त राज्यों एवं संघ राज्य क्षेत्रों के अतिरिक्त शेष राज्य एवं संघ राज्य क्षेत्र।

राजभाषा नियम 5 :- हिंदी में प्राप्त पत्रों के उत्तर केंद्रीय कार्यालय से हिंदी में दिए जाएंगे।

राजभाषा नियम 6:- राजभाषा अधिनियम की धारा 3 (3) में उल्लिखित 14 दस्तावेजों मे हिंदी और अंग्रेजी का प्रयोग किया जाएगा। ऐसे दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने वाले की ज़िम्मेदारी है कि वह यह सुनिश्चित करें कि ऐसे दस्तावेज़ हिंदी और अंग्रेजी में तैयार किए जाते हैं, निष्पादित किए जाते हैं तथा जारी किए जाते हैं।

मैं एक ऐसे धर्म में विश्वास करता हूँ जो स्वतंत्रता, समानता और भाईचारे का प्रचार करता है। - चंद्रशेखर आजाद

राजभाषा नियम 7 (1) :- कोई कर्मचारी अपना आवेदन, अपील या अभ्यावेदन हिंदी या अंग्रेजी में कर सकता है।

राजभाषा नियम 7 (2) :- यदि किसी कर्मचारी ने अपना आवेदन, अपील या अभ्यावेदन हिंदी में दिया है अथवा उस पर हिंदी में हस्ताक्षर किया गया है तो उसका उत्तर हिंदी में दिया जाएगा।

राजभाषा नियम 7 (3) :- यदि कोई कर्मचारी यह चाहता है कि सेवा से संबंधित विषयों (जिनके अंतर्गत अनुशासनिक कार्यवाहियाँ शामिल हैं) से संबंधित कोई आदेश, सूचना जिसे कर्मचारी पर लागू किया जाना अपेक्षित है, जैसी भी स्थिति हो, हिंदी या अंग्रेजी में होनी चाहिए, उसे बिना किसी विलंब के उसी भाषा में दी जाएगी।

राजभाषा नियम 9 - हिंदी में प्रवीणता प्राप्त यदि किसी कर्मचारी ने

(क) मैट्रिक परीक्षा या उसकी समतुल्य या उससे उच्चतर कोई परीक्षा हिंदी के माध्यम से उत्तीर्ण कर ली है या

(ख) स्नातक परीक्षा में अथवा स्नातक परीक्षा के समतुल्य या उससे उच्चतर किसी अन्य परीक्षा में हिंदी को एक वैकल्पिक विषय के रूप में लिया हो या

(ग) यदि वह इन नियमों से संबंधित प्रारूप में यह घोषणा करता है कि उसे हिंदी में प्रवीणता प्राप्त है।

तो उसके बारे में यह समझा जाएगा कि उसने हिंदी में प्रवीणता प्राप्त कर ली है।

राजभाषा नियम 10 - हिंदी में कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त यदि किसी कर्मचारी ने

(क) मैट्रिक परीक्षा या उसके समतुल्य या उससे उच्चतर परीक्षा हिंदी विषय के साथ उत्तीर्ण कर ली है या

(ख) केन्द्रीय सरकार की हिंदी प्रशिक्षण योजना के अंतर्गत आयोजित प्राज्ञ परीक्षा या यदि उस सरकार द्वारा किसी विशेष वर्ग के पद के संबंध में उस योजना के अंतर्गत कोई निम्नतर परीक्षा विनिर्दिष्ट है तो वह परीक्षा उत्तीर्ण कर ली हो या

(ग) केन्द्रीय सरकार द्वारा विनिर्दिष्ट कोई अन्य परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है या

यदि वह इन नियमों से संबंधित प्रारूप में यह घोषणा करता है कि उसने ऐसा ज्ञान प्राप्त कर लिया है।

तो उसके बारे में यह समझा जाएगा, उसने हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है।

राजभाषा नियम 11 (1) :- केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों से संबंधित सभी मैन्युअल, संहिताएं और प्रक्रिया संबंधी अन्य साहित्य, हिंदी और अंग्रेजी में द्विभाषी रूप में जैसी भी स्थिति हो, मुद्रित या साइक्लोस्टाइल किया जाएगा तथा प्रकाशित किया जाएगा।

राजभाषा नियम 11 (2) :- केन्द्रीय कार्यालय के किसी कार्यालय में प्रयोग किए जाने वाले रजिस्टररों के प्रारूप और शीर्षक हिंदी और अंग्रेजी में होंगे।

केंद्रीय सरकार साधारण या विशेष आदेश द्वारा केंद्रीय सरकार के किसी कार्यालय को इस नियम के सभी या किन्ही उपवन्धों में छूट दे सकती है।

राजभाषा नियम 12 (I) :- केंद्रीय सरकार के प्रत्येक कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का यह उत्तरदायित्व होगा कि वह यह सुनिश्चित करें कि अधिनियम और इन नियमों के उपबंन्धों और नियम (2) के अधीन जारी किए गए निदेशों का समुचित रूप से अनुपालन हो रहा है।

राजभाषा नियम 12 (II) :- इस प्रयोजन के लिए उपयुक्त और प्रभावकारी जांच के लिए उपाय करें।

(2) केंद्रीय सरकार अधिनियम और इन नियमों के उपबंन्धों के पूरी तरह अनुपालन के लिए अपने कर्मचारियों और कार्यालयों को समय-समय पर आवश्यक निदेश जारी कर सकती है।

◆◆◆

जीवन संघर्ष

ज्योति दत्तु आडके
डाटा इन्ट्री ऑपरेटर (अनुबंध)

जब तक जीवन है, तब तक यह हमेशा आसानी से नहीं गुजरती। हर दिन कोई न कोई चुनौती, कोई न कोई संघर्ष जीवन में आता है और आता ही रहेगा।

ऐसा कोई नहीं है जिसके जीवन में चुनौतियाँ न हों, दुःख न हों, कठिनाई न हों, रुकावटें न हों, कोई अपनी नौकरी बचाने के लिए संघर्ष कर रहा है, कोई अपने रिश्ते बचाने के लिए संघर्ष कर रहा है और कोई नौकरी ढूंढने के लिए संघर्ष कर रहा है। संघर्ष का दौर तो तब से शुरू हो जाता जब एक बच्चा माँ के पेट में होता है। जब वह चलना एवं बोलना सीखता है, उसके लिए भी वह संघर्ष करता है,गिरता है, उठता है, फिर चलता है। जब वह बड़ा होता है, पढ़ाई के लिए संघर्ष चालू हो जाता है।

एक बेटी ने अपने पिता से कहा, मैं बहुत परेशान हो चुकी हूँ। मेरा जीवन परेशानियों, बाधाओं एवं कठिनाइयों से भरा हुआ है। एक समस्या जाती है तो दूसरी समस्या आ जाती है। मैं बहुत दुखी हो चुकी हूँ। मैं क्या करूँ? अपनी बेटी के इस तरह से बात करने पर पिता सोच में पड़ गये। थोड़ा सोचने के बाद पिता ने अपनी बेटी से कहा ''बेटी क्या तुम मेरे साथ रसोई में चल सकती हो?'' बेटी थोड़ा मायूस हो गई, वह सोचने लगी मैंने अपने पिता को अपनी समस्या बताई और वह मुझे किचन में ले जा रहे है, पर रूखे मन से अपने पिता से बोली ''ठीक है पापा, मैं चलती हूँ।'' उसके पिता ने तीन पतीले लिए और उनमें बराबर-बराबर पानी भर दिया और गैस के तीन चूल्हों पर रख दिया। एक पतीले में उन्होंने कुछ आलू डाले, दूसरे पतीले में कुछ अंडे डाले और तीसरे पतीले में उन्होंने कॉफी बीन्स डाली और तीनों पतीलों को एक समान ताप में उबलने के लिए रख दिया और इंतजार करने लगे।

इस बीच वह अपनी बेटी से कुछ भी नहीं बोले, बस उन तीनों पतीलों को देखते रहे। बेटी भी चुपचाप खड़ी रही और कभी अपने पिता को, तो कभी उन पतीलों को देखती रहीं। करीब 15 मिनट के बाद जब वह चीजे पूरी तरह उबल गई तब उन्होंने तीनों चूल्हे बंद कर दिए। आलू वाले पतीले से आलू बाहर निकाले, अंडे वाले पतीले से अंडों को बाहर निकाला और कॉफी को एक प्याले में निकाला और बेटी से बोले बताओं, तुमने क्या देखा? बेटी ने जवाब दिया 'आलू, अंडे और कॉफी' आलू को देखकर बताओ पहले और अब में क्या अंतर है? बेटी बोली 'आलू पहले सख्त थे, अब

उबलने से मुलायम हो गए है'। अब पिता ने अंडों से छिलके निकालने को कहा, बेटी ने ऐसा ही किया। पिता ने पूछा 'अब पहले अंडों और अब के अंडों में क्या अंतर है?' बेटी बोली 'पहले अंडे ऊपर से सख्त थे और अंदर तरल था, अब अंडे अपने छिलकों से बाहर है और तरल से सक्त हो चुके है।' पिता ने कहा अब कॉफी के बारे में बताओ। बेटी बोली 'कॉफी बीन्स अलग-अलग थी, आप पानी के साथ मिल चुके है और अच्छी खुशबू भी आ रही है'।

अब पिता ने बताया कि इन तीनों चीजों को एक समान पानी में एक ही ताप पर और एक समान समय पर उबाला, उसके बाद भी परिणाम अलग-अलग मिले। हमारा जीवन भी ऐसा ही है। हर किसी के जीवन में समस्या आती है, और सभी को संघर्ष करना पड़ता है, परन्तु यह हमारे ऊपर निर्भर करता है कि हम इसको किस तरह से देखते हैं।

जब संघर्ष का समय आता है, तब किसी के लिए एक समस्या बहुत बड़ी समस्या होती है, वहीं किसी दूसरे के लिए वही समस्या एक अवसर बन जाती है। यह सब आपकी सोच पर निर्भर करता है। इसीलिए कभी भी समस्या से घबराएं नहीं, सकरात्मक रहें। इस बात को याद रखें। 'अगर यह काम हो गया तो अच्छा है और नहीं हो पाया तो और भी अच्छा है'। संघर्ष केवल उन लोगों के हिस्से में आती है, जो इसे बेहतरीन तरीके से अंजाम देने की ताकत रखते हैं और सफल भी होते हैं।

◆◆◆

सुमित कोरी
कार्यालय सहायक (मा.सं.)

छोड़ दीजिए

एक दो बार समझाने से यदि कोई नहीं समझ रहा है,
तो सामने वाले को समझाना छोड़ दीजिए।
बच्चे बड़े होने पर वो खुद के निर्णय लेने लगे तो,
उनके पीछे लगना छोड़ दीजिए।
गिने चुने लोगों से अपने विचार मिलते है,
यदि एक दो से नहीं मिलते तो उन्हें छोड़ दीजिए।
एक उम्र के बाद कोई आपको न पूछे,
या कोई पीठ पीछे आपके बारे में गलत कह रहा है,
तो दिल पर लेना छोड़ दीजिए।
अपने हाथ कुछ नहीं, ये अनुभव आने पर,
भविष्य की चिंता करना छोड़ दीजिए।
यदि इच्छा और क्षमता में बहुत फर्क पड़ रहा है,
तो खुद से अपेक्षा करना छोड़ दीजिए।
हर किसी का पद, कद, मद, सब अलग है,
इसलिए तुलना करना छोड़ दीजिए।
बढ़ती उम्र में जीवन का आनंद लीजिए,
रोज जमा खर्च की चिंता करना छोड़ दीजिए।
उम्मीदें होंगी तो सदमे भी बहुत होंगे,
यदि सुकून से रहना है तो उम्मीदें करना छोड़ दीजिए।

(व्हाट्सएप से साभार) ◆◆◆

हिंदी पखवाड़ा - 2022

करेंसी नोट प्रेस,नासिक में दिनांक 14.09.2022 से 29.09.2022 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। हिंदी पखवाड़ा-2022 का उद्घाटन माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह द्वारा सूरत, गुजरात में किया गया। हिंदी पखवाड़ा के दौरान इकाई में कुल 04 हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। दिनांक 19.09.2022 को हिंदी निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें 20 प्रतिभगियों ने भाग लिया। इनमे से 12 प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया। दिनांक 20.09.2022 को आशु भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें 17 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इनमें से 12 प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया। दिनांक 21.09.2022 अनुवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें 29 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इनमे से 12 प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया। दिनांक 22.09.2022 को प्रश्नमंच प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें 39 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इनमें से 12 प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया। इन 04 प्रतियोगिताओं में कुल 105

इंसान जैसा सोचता है वैसा ही बन जाता है।

प्रतिभागियों ने भाग लिया जिसमें से 48 प्रतिभागियों को पुरस्कार राशि एवं प्रमाण पत्र देकर मुख्य महाप्रबंधक द्वारा दिनांक 29 सितंबर 2022 को पुरस्कृत किया गया। इसके अतिरिक्त डॉ राजेश आहेर द्वारा दिनांक 24 सितंबर, 2022 को 'नट सम्राट' नाटक की एकल प्रस्तुति की गई जिसे करेंसी नोट प्रेस के अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा बहुत सराहा गया।

इकाई के कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर्मचारियों के लिए ऑनलाइन पारंगत प्रशिक्षण

हिंदी शिक्षण योजना, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, भारत सरकार, नवी मुंबई के दिनांक 10.11.2022 के पत्र संख्या 6 / 4 / हिंदी भाषा प्रशिक्षण /जनवरी-मई /2022 -23 /3902 -4172 में दिए गए निर्देशानुसार मुख्य महाप्रबंधक द्वारा इकाई के 30 कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर्मचारियों को ऑनलाइन पारंगत प्रशिक्षण के लिए नामित किया गया है। यह प्रशिक्षण 03 जनवरी 2023 से प्रारम्भ हुआ है जो 15 मई 2023 तक चलेगा। इस प्रशिक्षण की कक्षाएँ सप्ताह में 02 दिन मंगलवार एवं गुरुवार को अपराह्न 3.00 बजे से 4.30 तक ऑनलाइन चलती हैं। इस प्रशिक्षण में सुश्री गार्गी गाडगिल, प्रधान अध्यापिका, हिंदी शिक्षण योजना कार्यालय, नवी मुंबई द्वारा ऑनलाइन कर्मचारियों को पढ़ाया जाता है। इस प्रशिक्षण में नामित कर्मचारियों की परीक्षा मई-2023 के तृतीय सप्ताह में आयोजित होगी।

सीएनपी की औद्योगिक कैंटीन में स्मार्ट कैंटीन कार्ड का शुभारंभ

करेंसी नोट प्रेस एक संवेदनशील संस्थान है। इकाई परिसर में कार्यरत कर्मचारियों को कैश लेनदेन करने में काफी कठिनाई होती थी। विशेषकर शॉप फ्लोर में कार्यरत कामगारों को कैश रखने में काफी असुविधा होती थी। इकाई के कैंटीन से जलपान, भोजन, चाय आदि को लेने के लिए आई टी विभाग द्वारा स्मार्ट कैंटीन कार्ड तैयार किया गया है। कर्मचारियों के पहचान पत्र में एक डिवाइस के माध्यम से स्मार्ट कैंटीन कार्ड को सक्रिय कर दिया गया है। इकाई का कोई भी कर्मचारी डिजिटल माध्यम से कैंटीन से जलपान, भोजन एवं चाय आदि ले सकता है। इस समय सभी अधिकारी, वरिष्ठ पर्यवेक्षक, पर्यवेक्षक, स्टाफ तथा कामगार को स्मार्ट कैंटीन कार्ड उपलब्ध करा दिया गया है।

इस कार्ड का उदघाटन दिनांक 07.11.2022 को श्री एस.के.सिन्हा, निदेशक (मा.सं.), एसपीएमसीआईएल, निगम मुख्यालय, नई दिल्ली द्वारा किया गया। इस अवसर पर इकाई प्रमुख श्री बोलेवर बाबु, मुख्य महाप्रबंधक उपस्थित थे। इसके अलावा इकाई के अन्य अधिकारी तथा मान्यताप्राप्त यूनियन एवं एसोसिएशन के प्रतिनिधि गण उपस्थित थें।

सब कुछ अपनी गति से होता है। माली सौ बाल्टी पानी दे सकता है; फल अपने मौसम में ही आता है। - संत कबीर

मानव संसाधन विभाग का प्रशासनिक भवन में स्थानांतरण

मानव संसाधन विभाग को सीएनपी के प्रशासनिक भवन के नए कक्ष में दिनांक 07.11.2022 को स्थानांतरित किया गया। यह विभाग पहले क्रय विभाग के पास स्थापित था। मानव संसाधन विभाग के नए कक्ष का उदघाटन श्री एस.के. सिन्हा, निदेशक (मा.सं.) एसपीएमसीआईएल, निगम मुख्यालय, नई दिल्ली ने किया। इस अवसर पर इकाई के मुख्य महाप्रबंधक श्री बोलेवर बाबु सहित इकाई के अन्य अधिकारी, कर्मचारी एवं मान्यता प्राप्त यूनियन एवं एसोसिएशन के प्रतिनिधी भी उपस्थित थें। नए मानव संसाधन विभाग का नवीनीकरण कराया गया था तथा फर्नीचर एवं इलेक्ट्रानिक उपकरणों से सुसज्जित किया गया था। इस नए कक्ष को बहुत ही सुंदर ढंग से सजाया गया था।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह - 2022

करेंसी नोट प्रेस, नासिक में दिनांक 31.10.2022 से 06.11.2022 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह-2022 का आयोजन किया गया। श्री बोलेवर बाबु, मुख्य महाप्रबंधक द्वारा दिनांक 31.10.2022 को प्रातः 10.30 बजे करेंसी नोट प्रेस परिसर में मुख्य गेट के पास इकाई के अधिकारियों/कर्मचारियों एवं मान्यता प्राप्त यूनियन प्रतिनिधियों एवं मान्यता प्राप्त कामगार यूनियन प्रतिनिधियों को सत्यनिष्ठा का शपथ दिलाया गया। दिनांक 01.11.2022 को करेंसी नोट प्रेस के कर्मचारियों के लिए 'विकसित राष्ट्र में भ्रष्टाचार मुक्त भारत' विषय पर निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें 18 कर्मचारियों ने भाग लिया । इस प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पाने वाले प्रतिभागियों को क्रमशः 3000/-, 2000/- एवं 1000/- रुपए का नकद पुरस्कार एवं प्रमाणपत्र प्रदान किए गए। इसके अलावा दिनांक 04.11.2022 को बिरला ओपेन माइण्ड्स इंटर नेशनल स्कूल, नासिक में पोस्टर बनाने तथा स्लोगन लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें 20 छात्रों ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता में विजेता प्रतिभागियों को नकद पुरस्कार एवं प्रमाणपत्र प्रदान किए गए। मुख्य महाप्रबंधक की अध्यक्षता में दिनांक 05.11.2022 को वेंडर बैठक का आयोजन किया गया जिनमें 49 फर्मों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। दिनांक 06.11.2022 को सतर्कता विभाग द्वारा जखोरी गाँव में एक ग्राम सभा का आयोजन किया गया था। गाँव के लोगों के लिए एक भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिनमें 17 लोगों ने भाग लिया। प्रतियोगिता में विजेता प्रतिभागियों को नकद पुरस्कार प्रदान किए गए। सम्पूर्ण कार्यक्रम हिंदी में सम्पन्न किए गए।

अच्छी सोच इंसान को हमेशा अच्छा रास्ता दिखाती है। - कालिदास

स्वास्थ्य शिविर

करेंसी नोट प्रेस, नासिक में आजादी के अमृत महोत्सव के अवसर पर दिनांक 11.01.2023 से 13.01.2023 तक अशोका मेडिकवर हास्पिटल, नासिक के सौजन्य से स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर का उदघाटन सीएनपी के मुख्य महाप्रबंधक श्री बोलेवर बाबु ने किया। इस शिविर में अशोका मेडिकवर हास्पिटल, नासिक के डॉक्टर हर्षदा, फिजिशियन, मार्केटिंग हेड श्री चेतन कुलकर्णी तथा पैरा मेडिकल के अन्य स्टाफ उपस्थित थे। इस शिविर में कर्मचारियों के ब्लड प्रेशर, ब्लड शुगर (रेंडम), पल्स तथा फेफड़े की जांच एवं सामान्य बीमारी की जांच की गई। इस अवसर पर सीएनपी के अधिकारी, कर्मचारी एवं मान्यता प्राप्त यूनियन एवं एसोसिएशन के प्रतिनिधि गण उपस्थित थें।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, नासिक की वर्ष 2022 की द्वितीय बैठक दिनांक 30.11.2022 को हिंदुस्तान एरोनॉटिक्स लिमिटेड, नासिक में वीडिओ कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से आयोजित की गई । इस बैठक में करेंसी नोट प्रेस की ओर से श्री बोलेवर बाबु, मुख्य महाप्रबंधक, श्री लोकनाथ तिवारी, प्रबंधक (राजभाषा), श्री अशोक कुमार श्रीवास्तव, परामर्शदाता (राजभाषा) ने भाग लिया।

कार्यालय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक

क्रम संख्या	बैठक की तिथि
01	17.03.2022
02	29.06.2022
03	27.09.2022
04	20.12.2022

खुद को पाने का सबसे अच्छा तरीका दूसरों की सेवा में खुद को खो देना है।

करेंसी नोट प्रेस में गणतंत्र दिवस समारोह का आयोजन

करेंसी नोट प्रेस में गणतंत्र दिवस समारोह 26 जनवरी 2023 को पूरे जोश एवं उल्लास के साथ मनाया गया। यह वर्ष आजादी का अमृत महोत्सव के रूप में मनाया जा रहा है।

सर्व प्रथम सीएनपी के मुख्य गेट पर श्री बोलेवर बाबु, मुख्य महप्रबंधक महोदय का स्वागत अधिकारियों एवं यूनियन प्रतिनिधियों ने किया। उसके पश्चात मुख्य महप्रबंधक महोदय ने सीआईएसएफ के जवानों के परेड का निरीक्षण किया तथा राष्ट्रीय ध्वज फहराया।

मुख्य महाप्रबंधक महोदय ने अपने संबोधन में कहा कि करेंसी नोट प्रेस जहाँ एक ओर बैंक नोटों की गुणवत्ता के क्षेत्र में प्रगति की है, वहीं हमने बैंक नोटों के उत्पादन में भी रिकार्ड तोड़ उत्पादन किया है। नई मशीनो के आगमन से हमारे प्रयासों को नई उचाई मिली है और हम बैंक नोटो के प्रतिदिन उत्पादन के शीर्ष पर पहुँच गए हैं। यह अपने आप में एक मिसाल और रिकार्ड है।

मुझे यह सूचित करते हुए भी की अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि हाल ही में सीएनपी ने अन्तर्राष्ट्रीय निविदा में भाग लेते

जो सेवा बिना आनंद के की जाती है, वह न तो सेवक की मदद करती है और न ही सेवा करने वाले की। - महात्मा गाँधी

हुए चीन को पीछे छोड़ते हुए नेपाल राष्ट्र बैंक की निविदा में सफलता प्राप्त की है, अब सीएनपी भारत के अतिरिक्त नेपाल राष्ट्र बैंक, नेपाल के लिए भी बैंक नोटों का मुद्रण करेगी।

आज करेंसी नोट प्रेस अन्तर्राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप उत्पादन कर रहा है और इसका पूरा श्रेय यहाँ कार्यरत अधिकारियों, कर्मचारियों, मान्यताप्राप्त यूनियनों और एसोसिएशनों एवं कामगार बंधुओं का जाता है।

इस अवसर पर सीआईएसएफ द्वारा अचानक हार्ट अटैक आने पर कैसे सीपीआर दिया जाता है। सीपीआर देकर किसी कर्मचारी की कैसे जान बचाई जा सकती है। इसका सीआईएसएफ कार्मिक द्वारा प्रत्यक्ष उदाहरण प्रस्तुत किया गया।

इस अवसर पर मुख्य महाप्रबंधक महोदय ने सराहनीय कार्य करने वाले 07 अधिकारियों, 53 वरिष्ठ पर्यवेक्षकों /पर्यवेक्षकों को सिल्वर मेडल तथा प्रशस्ति पत्र तथा 171 कामगारों को कलाई घड़ी एवं प्रशस्ति पत्र देकर पुरस्कृत किया गया। इसके अतिरिक्त सर्वाधिक उत्पादन करने के लिए नंबरिंग सेक्शन तथा सर्वाधिक सफाई व्यवस्था रखने के लिए कट पैक सेक्शन को शील्ड प्रदान किया गया।

अंत में उन्होंने उपस्थित सभी अधिकारियों, कर्मचारियों, कामगार बंधुओं, मान्यता प्राप्त यूनियनों और एसोसिएशनों, सीआईएसएफ कार्मिकों डॉक्टरों, उनके सहयोगियों और सफाई कर्मियों को भारत के गणतंत्र दिवस की पुनः शुभकामना और बधाई दी।

'जीवन-शैली एवं समय प्रबंधन' विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

करेंसी नोट प्रेस, नासिक में 'जीवन शैली एवं समय प्रबंधन' विषय पर दिनांक 30.01.2023 को प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्घाटन श्री नवीन कुमार, संयुक्त महाप्रबंधक (मानव संसाधन) ने किया। कार्यक्रम का संचालन श्री अर्पित धवन, प्रबंधक (मानव संसाधन) ने किया। इस कार्यक्रम में व्याख्यान देने के लिए दत्तोपंत ठेगडी राष्ट्रीय श्रमिक शिक्षा एवं विकास बोर्ड की क्षेत्रीय निदेशक सुश्री सारिका डाफरे को आमंत्रित किया गया था। सर्व प्रथम संयुक्त महाप्रबंधक (मानव संसाधन) ने सुश्री डाफरे को शॉल देकर सम्मानित किया। उन्होंने प्रशिक्षण कार्यक्रम में उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को प्रशिक्षण कार्यक्रम के उद्देश्य को बताया।

सुश्री सारिका डाफरे ने जीवन शैली एवं समय प्रबंधन पर उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को विस्तृत रूप से समझाया तथा प्रतिभागियों के प्रश्नों के उत्तर देकर उनका शंका समाधान किया।

द्वितीय सत्र में डॉ. विकास देव ने जीवन शैली एवं समय प्रबंधन विषय पर प्रतिभागियों से प्रेक्टिकल कराया तथा उनके प्रश्नों के उत्तर दिए। इस कार्यक्रम में 02 अधिकारी एवं 24 कर्मचारी उपस्थित थे।

कार्यक्रम के अंत में श्री अर्पित धवन, प्रबंधक (मानव संसाधन) एवं दत्तोपंत ठेगडी राष्ट्रीय श्रमिक शिक्षा एवं विकास बोर्ड के क्षेत्रीय निदेशक सुश्री सारिका डाफरे ने सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र प्रदान किए। संपूर्ण कार्यक्रम हिंदी में सम्पन्न किए गए।

जिन लोगों में सोचने की क्षमता है उन्हें किसी सिखाने वाले की जरूरत नहीं होती।

एसपीएमसीआईएल स्थापना दिवस

करेंसी नोट प्रेस, नासिक में दिनांक 10.02.2023 को एसपीएमसीआईएल का 18वाँ स्थापना दिवस हर्ष एवं उल्लास के साथ मनाया गया। सर्व प्रथम सीएनपी परिसर में मुख्य महाप्रबंधक श्री बोलेवर बाबु ने एसपीएमसीआईएल का ध्वज फहराया। इस अवसर पर अपर महाप्रबंधक (त.प्र.) श्री एस.आर वाजपे, सभी संयुक्त महाप्रबंधक, सभी उप महाप्रबंधक, सभी अधिकारी तथा मान्यताप्राप्त यूनियनों एवं एसोसिएशनों के प्रतिनिधि एवं कर्मचारी उपस्थित थे।

मुख्य महाप्रबंधक महोदय ने सर्व प्रथम एसपीएमसीआईएल के 18वां स्थापना दिवस पर उपस्थित सभी अधिकारियों, कर्मचारियों, कामगारों तथा यूनियन के प्रतिनिधियों को बधाई दिया। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि करेंसी नोट प्रेस, नासिक एसपीएमसीआईएल के 09 इकाईयों में उत्पादन के क्षेत्र में सबसे आगे है । इसके लिए सीएनपी के सभी कर्मचारी, कामगार एवं अधिकारी बधाई के पात्र है। यह सब सभी यूनियनों के प्रतिनिधियों के सहयोग से संभव हुआ है।

अभी हाल में ही नेपाल की करेंसी को मुद्रण के लिए कांट्रैक्ट मिला है। यह एसपीएमसीआईएल के लिए बहुत बड़ी उपलब्धि है। उन्होंने इकाई में उत्पादन बढ़ाने के लिए 05 सूत्रीय संरक्षा, सुरक्षा, गुणवत्ता, उत्पादन एवं

कर्मचारियों का कल्याण का फॉर्मूला बताया। उन्होंने आगे कहा कि यदि इन 05 सूत्रों पर निष्ठा पूर्वक कार्य किया जाए तो करेंसी नोट प्रेस अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपना पहचान बनाएगी।

इसके बाद मुख्य महाप्रबंधक, अपर महाप्रबंधक (त.प्र.) एवं आईएसपी मजदूर संघ के महासचिव ने सम्मेलन कक्ष में केक काटा । इस अवसर पर इकाई के सभी अधिकारी एवं सभी यूनियनों के प्रतिनिधि उपस्थित थे। बैठक में आईएसपी मजदूर संघ के महासचिव श्री जगदीश गोडसे ने स्थापना दिवस पर अपने विचार व्यक्त किए। इसके अतिरिक्त श्रीमती बंदना श्याम, प्रबंधक (वित्त एवं लेखा) श्री दीपक अशोक पडवल, संयुक्त महाप्रबंधक (त.प्र.), श्री अहमद पाशा, संयुक्त महाप्रबंधक (त.प्र.) श्री एस.के.मुखोपाध्याय, संयुक्त महाप्रबंधक (त.स.), श्री वी. किरण कुमार, संयुक्त महाप्रबंधक (सामग्री), श्री एस.आर.वाजपे, अपर महाप्रबंधक (त.प्र.) विभिन्न यूनियनों के प्रतिनिधियों ने स्थापना दिवस एवं सीएनपी के उपलब्धियों के संबंध में अपने विचार व्यक्त किए। अंत में श्री बोलेवर बाबु, मुख्य महाप्रबंधक ने स्थापना दिवस पर उपस्थित सभी अधिकारियों एवं यूनियन के प्रतिनिधियों को बधाई दिया। उन्होंने करेंसी नोट प्रेस में हुई उपलब्धियों के संबंध में विस्तृत रूप से चर्चा की।

इस अवसर पर करेंसी नोट प्रेस के सभी अधिकारियों, कर्मचारियों, कामगारों तथा संविदा पर कार्य कर रहे सभी कर्मचारियों एवं सीआईएसएफ कार्मिकों को मिठाई बांटी गई।

सुजोक थेरेपी

करेंसी नोट प्रेस, नासिक ने अपने सभी कर्मचारियों को उत्तम स्वास्थ्य प्रदान करने के लिए दिनांक 08.10.2022 को सुजोक एक्यूप्रेशर थेरेपी प्रणाली का शुभारंभ किया। इस प्रणाली का उद्घाटन इकाई के महाप्रबंधक श्री एस. महापात्र द्वारा किया गया। इस अवसर पर इकाई के वरिष्ठ अधिकारी, यूनियन के पदाधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे।

सुजोक एक्यूप्रेशर थेरेपी प्रणाली के माध्यम से हथेलियों और पैरों में कुछ खास बिंदुओं पर दबाव डालकर इलाज किया जाता है । इसके अंतर्गत छोटी या बड़ी चुंबक को शरीर के कुछ खास हिस्सों पर रखा जाता है जिससे रक्त संचार और ऊर्जा का संचार ठीक प्रकार से हो सके। इस चुंबक का मुख्य कार्य शरीर में संतुलन बनाए रखना एवं बीमारी को पूरी तरह ठीक करना होता है। सुजोक एक्यूप्रेशर थेरेपी प्रणाली का शरीर पर कोई भी साइड इफेक्ट नहीं होता है।

इस इकाई के सभी कर्मचारी सुजोक एक्यूप्रेशर थेरेपी प्रणाली की सुविधा का लाभ उठा रहे हैं।

संघर्ष न होने पर जीवन अपनी आधी रुचि खो देता है। -नेताजी सुभाष चंद्र बोस

''मानसिक स्वास्थ्य एवं उसे बेहतर बनाने हेतु उपाय'' विषय पर दिनांक 25.02.2023 को आयोजित हिंदी कार्यशाला

करेंसी नोट प्रेस, नासिक में 'मानसिक स्वास्थ्य एवं उसे बेहतर बनाने हेतु उपाय' विषय पर दिनांक 25.02.2023 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्घाटन श्री एस आर वाजपे, अपर महाप्रबंधक, श्री नवीन कुमार, संयुक्त महाप्रबंधक (मानव संसाधन) ने किया। कार्यक्रम का संचालन श्री लोकनाथ तिवारी, प्रबंधक (राजभाषा) ने किया। इस कार्यक्रम में व्याख्यान देने के लिए दत्तोपंत ठेगडी राष्ट्रीय श्रमिक शिक्षा एवं विकास बोर्ड की क्षेत्रीय निदेशक सुश्री सारिका डाफरे को आमंत्रित किया गया था। सर्वप्रथम अपर महाप्रबंधक एवं संयुक्त महाप्रबंधक (मानव संसाधन) ने सुश्री डाफरे को पुस्तक देकर सम्मानित किया। उन्होंने प्रशिक्षण कार्यक्रम में उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को प्रशिक्षण कार्यक्रम के उद्देश्य को बताया।

सुश्री सारिका डाफरे ने मानसिक स्वास्थ्य की रक्षा एवं उसे बेहतर बनाने हेतु उपाय विषय पर उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को विस्तृत रूप से समझाया तथा प्रतिभागियों के प्रश्नों के उत्तर देकर उनका शंका समाधान किया।

द्वितीय सत्र में डॉ. विकास देव ने मानसिक स्वास्थ्य की रक्षा एवं उसे बेहतर बनाने हेतु उपाय विषय पर प्रतिभागियों से प्रेक्टिकल कराया तथा उनके प्रश्नों के उत्तर दिए। इस कार्यक्रम में 01 अधिकारी एवं 25 कर्मचारी उपस्थित थे।

कार्यक्रम के अंत में, अपर महाप्रबंधक (त.प्र.), संयुक्त महाप्रबंधक (मानव संसाधन) एवं दत्तोपंत ठेगडी राष्ट्रीय श्रमिक शिक्षा एवं विकास बोर्ड की क्षेत्रीय निदेशक सुश्री सारिका डाफरे ने सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र प्रदान किए। संपूर्ण कार्यक्रम का संचालन प्रबंधक (राजभाषा) ने किया।

मनुष्य जन्म से नहीं, कर्मों से महान होता है। - कालिदास

करेंसी नोट प्रेस, नासिक के बदलते परिदृश्य

शिक्षा का लक्ष्य ज्ञान की उन्नति और सत्य का प्रसार है। - डॉ. बी. आर. अम्बेडकर

करेंसी नोट प्रेस, नासिक के बदलते परिदृश्य

सीएनपी औद्योगिक कैंटीन के सामने लगाए गये दो नए लॉनों का मनोहर दृश्य.

आपके बुलंद इरादे पहाड़ बनाते हैं और आपके कार्य उन्हें आगे बढ़ाते हैं।